jkT; ‘kf{kd vu|l/kku vkj if’k{k.k ifj”kn
NRrhlx<

jkT; Lrjh; vkdyu

विश्लेषण आधारित प्रशिक्षण माड्यूल

सत्र – 2019–20

संस्कृत

मार्गदर्शक

पी. दयानंद (IAS)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छ.ग., शंकरनगर, रायपुर

डॉ. सुनीता जैन
अतिरिक्त संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छ.ग., शंकरनगर, रायपुर

आकलन प्रभारी

अनुपमा नलगुंडवार

विशेष सहयोग

के.पी.एम.जी., इंडिया

समन्वयक

डॉ. विद्यावती चंद्राकर, डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

सामग्री निर्माण

पीला राम साहू, अनिल बर्थवाल, गुणसागर प्रधान, डॉ. व्यास नारायण आर्य, भगवानी निषाद, लीलाधर साहू, तीरथ प्रसाद बडगईयां

तकनीकी सहयोग

आई संध्यारानी, संतोष कुमार तंबोली, कुशाग्र चौबे, दिवाकर निमजे

आवरण पृष्ठ	ले–आउट	टंकण
सुधीर कुमार वैष्णव	कुन्दन लाल साहू	डिकेश्वर वर्मा

आमुख

किसी भी समाज की शिक्षा उस समाज की आवश्यकताओं और चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में होनी चाहिए। वर्तमान संदर्भों में यह जरूरी है कि बच्चे न केवल राष्ट्र के योग्य नागरिक बने बल्कि वैश्विक नागरिक बन कर सफलता हासिल करें। यह तभी संभव होगा, जब बच्चों में वैश्विक कौशलों का विकास किया जाए, जिससे प्रत्येक बच्चा हुनरमंद, योग्य नागरिक बनकर समाज की उन्नति में अपना योगदान दे सके।

यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक बच्चे के नजरिये से शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण किया जाए। इस विश्लेषण से उपजे परिणाम विकास का रास्ता तय करने में हमारी मदद करेंगे।

इस दिशा में सार्थक प्रयास आरंभ किए गए। राज्य स्तर पर सर्वप्रथम मंथन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में से एक प्रमुख चुनौती पूरी तीव्रता के साथ उभर कर सामने आई, वह थी, कक्षाओं में आकलन और अध्यापन का अलग–अलग होना। इससे बच्चों की नियमित व सतत् प्रगति का आकलन दुष्कर कार्य सिद्ध हुआ, साथ ही बच्चों के लिए सही समय पर उपचारात्मक शिक्षण (Remediation) में भी कठिनाईयाँ आईं।

आकलन यदि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का आवश्यक अंग बन जाता है तो बच्चे की प्रगति की नियमित जानकारी ली जा सकेगी, इस जानकारी के विश्लेषण के आधार पर यह पता लगाना संभव हो सकेगा कि कहाँ और किन क्षेत्रों में किस तरह के उपचार या सुधार कार्यों की आवश्यकता है।

इस रणनीति के तहत राज्य आकलन केन्द्र की स्थापना कर आगामी तीन वर्षों में सुधार, प्रगति व गुणवत्ता संवर्धन हेतु लक्ष्य निर्धारित किए गए :

1. सत्र 2019–20 में बेसलाइन आकलन
2. सत्र 2020–21 में मिडलाइन आकलन
3. सत्र 2021–22 में एण्डलाइन आकलन

इस तरह लक्ष्य को अंजाम तक पहुँचाने की पूर्ण तैयारी की गई है। समूची शिक्षा व्यवस्था के प्रत्येक अंग को रचनात्मक, सावधिक एवं योगात्मक आकलन के लिए तैयार किया गया है। विषयवार लर्निंग आउटकम्स आधारित अभ्यास पुस्तिकाएँ, प्रश्न बैंक, रूब्रिक्स तैयार कर स्कूलों में भेजने एवं प्रशिक्षणों की सशक्त व्यवस्थाएँ राज्य स्तर पर की गई हैं। हमारा यही प्रयास हमारी गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक विकास यात्रा को सार्थकता प्रदान करेगा।

इसी क्रम में यह शैक्षिक सामग्री आपको सौंपी जा रही है। विश्वास है कि बच्चों में विभिन्न कुशलताओं के विकास करने में यह सामग्री आपको सहयोग प्रदान करेगी।

दिसम्बर 2019

रायपुर

पी.दयानंद IAS
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.,छ.ग.

संस्कृतभाषा विषय प्रशिक्षण रूपरेखा

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृ. क्र.
संस्कृत भाषा अध्ययन : उद्देश्य, प्रकृति एवं महत्व	1-8
पहला दिन : • चित्ताकर्षण (Ice Breaker) गतिविधि • पारंपरिक योग्यता आधारित ढाँचे में जाने में परिवर्तन • प्रादर्श पाठ योजना • Task Distribution Matrix- TDM पर चर्चा	9-30 9 12 15 19
दूसरा दिन : • मूल्यांकन रचनात्मक → सावधिक → योगात्मक आकलन • FA और SA को क्रमबद्ध करना • FA और SA को निर्दिष्ट करना • सीखने के प्रतिफल • पाठ योजना	31-39 31 32 33 34 36
तीसरा दिन : • Transactional Pedagogy and use of Manipulatives • पाठ योजना	40-43 40 41
चौथा दिन : • उपचारात्मक शिक्षण • उपचारात्मक योजना	44-45 44 45
पाँचवा दिन : • पाठ योजना • सुझावात्मक गतिविधियाँ	46-68 46 48
संदर्भ व परिशिष्ट	69-75

संस्कृत भाषा

संस्कृत भाषा शिक्षण की महत्त्व एवं प्रकृतिः

सर्वा विद्याः पुरा प्रोक्ताः संस्कृते हि महर्षिभिः।
तद्विद्यानिधये सेव्यं संस्कृतं कामधेनुवत्।।

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। इस भाषा में वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, साहित्य आदि अनेक ग्रंथ लिखे गए हैं। इस भाषा में भारतीय सभ्यता और संस्कृति एवं सभ्यता के मूल तत्त्वों का असीमितभण्डार है। इस भाषा में जो साहित्य की जैसी साधना हुई वैसी किसी अन्य भाषा मे नहीं। इसी कारण उसे सम्पूर्ण विश्व का ज्ञानगुरू कहा जाता है। इस भाषा ने विभिन्न मतों, विभिन्न भाषाओं तथा उनके साहित्य और सामाजिक रीतियों तथा परम्पराओं को समान रूप से आश्रय प्रदान किया। यह भाषा अनेकता में एकता की दृष्टि से रीढ़ की हड्डी के समान है। संस्कृतभाषा विभिन्नता तथा अनेकता में एकता का उल्लेखनीय चित्रांकन प्रस्तुत करती है।

संस्कृत भाषा में सभी को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया गया है। इसकी मूल भावना ही है – 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'।

साहित्य की दृष्टि से महत्त्व :

संस्कृत भाषा में साहित्य का विशाल भण्डार है, ज्ञान, विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, चिकित्सा, गणित, ज्योतिष आदि सभी सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक ग्रन्थ संस्कृत में है। यदि संस्कृत भाषा का अध्ययन नहीं होगा तो इन ग्रन्थों में समाहित विपुल ज्ञानराशि से मावन समाज अछूता रह जायेगा।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से महत्त्व :

राष्ट्रीय एकता का सूत्र संस्कृतभाषा से प्राप्त होता है। जीवन के सभी परिदृश्यों में संस्कृत का भाव राष्ट्रीय एकता की भावना को बल प्रदान करता है। यथा– ' असिंधु सिंधु पर्यन्ता सर्वे हिन्दू स्मृताः।' अर्थात् हिमालय से कन्याकुमारी तक सभी हिन्दू हैं अर्थात् सच्चे अर्थ में भारतीय हैं।

मानवीय मूल्यों की दृष्टि से महत्त्व :

संस्कृत भाषा के अध्ययन से मानवीय मूल्यों का विकास होता है। इससे आचार–विचार–व्यवहार और सामाजिक न्याय, करूणा, दया, ममता और समानता के भावों का उदय होता है। संस्कृत में सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोने की भावना सर्वोपरि रही है; इसमें सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानने की भावना निहित है तभी तो कहा गया है –

''अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्''।।

व्यवसायिक दृष्टि से महत्त्व :

नाट्यकला, चित्रकला, वास्तुकला, स्थापत्यकला, संगीत, ज्योतिष, धर्मशास्त्र आदि ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखे गए है जिनका सम्यक् रूप से अध्ययन करके व्यक्ति अर्थोपार्जन करने में सक्षम हो जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से महत्त्व :

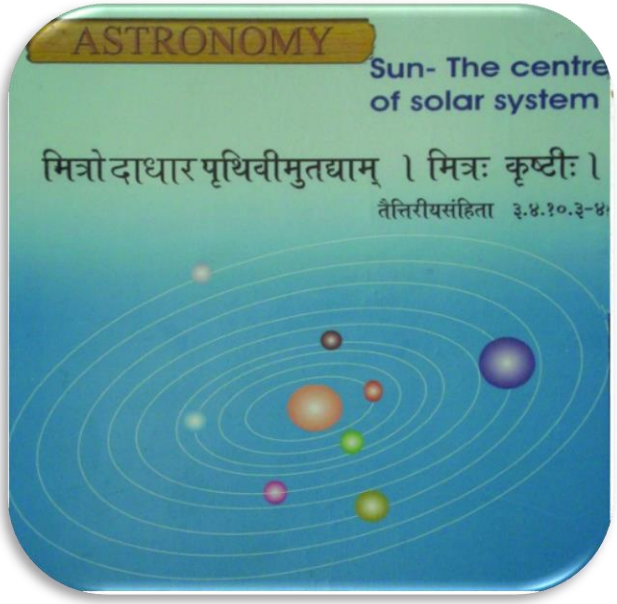

संस्कृत वैज्ञानिक भाषा है, इसमें जैसा कहा जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है, यह पद प्रधान भाषा है, पद प्रधान भाषा होने के कारण पदों के स्थान में परिवर्तन होने पर भी अर्थ में अन्तर नहीं आता है। अन्तरिक्ष से इस भाषा के माध्यम से भेजे जाने वाले सन्देश के अर्थ यथावत् रहते हैं ऐसा पद प्रधानता के कारण ही सम्भव होता है, इन्हीं विशेषताओं के कारण विश्व प्रसिद्ध अन्तरिक्ष वैज्ञानिक केन्द्र 'नासा' इसे वैज्ञानिक भाषा के रूप में मानता है, सुपर कम्प्यूटर की दृष्टि से भी संस्कृत भाषा सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। इस भाषा में विभिन्न उपसर्ग व प्रत्ययों के योग से नवीन शब्दों के निर्माण की अद्भुत क्षमता सन्निहित है।

संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्देश्य

वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में संस्कृत–शिक्षण के तीन स्तर निर्धारित किये जा सकते हैं–

(क) प्रारम्भिक स्तर

(ख) मध्य स्तर

(ग) उच्च स्तर

सभी स्तरों पर संस्कृत शिक्षा के अलग–अलग उद्देश्य हैं।

(क) प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत–शिक्षण के उद्देश्य :

प्रारम्भिक स्तर का प्रारम्भ वर्ग तीन से है। इस स्तर पर छात्रों से ऐसी आशा नहीं की जायेगी कि वे संस्कृत का गहन एवं व्यापक अध्ययन करें। इस स्तर पर मात्र इस बात से सन्तुष्ट हो जाना चाहिए कि बालक संस्कृत का वाचन कर सकें एवं उसे समझ सकें। वे सुभाषितों को पढ़ेंगे तो उनके भीतर आदर्श–निष्ठा उत्पन्न होगी। इस स्तर पर संस्कृत–शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं–

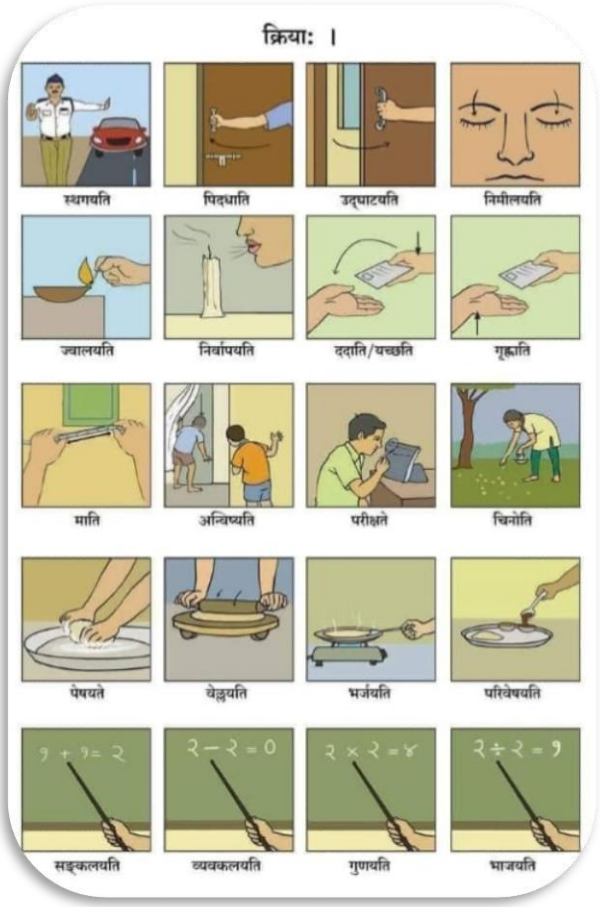

1. छात्रों को इस लायक बनाना कि वे संस्कृत पाठों का शुद्ध वाचन कर सकें।
2. शुद्ध उच्चारण का बोध भी इस स्तर पर अपेक्षित है।
3. आदर्श भावना से भरे श्लोकों को कण्ठस्थ करने की प्रेरणा।
4. प्रतिलिपि का अभ्यास, जिसमें छात्र किसी पत्र या गद्य खण्ड को देख, ठीक–ठीक लिख सकें।
5. छात्रों को इस दृष्टि से भी सक्षम बनाना जिसमें वे कण्ठस्थ किए हुए उद्धरणों को शुद्ध–शुद्ध लिख सकें।
6. श्रुतिलेख के माध्यम से शुद्ध–शुद्ध लिखने का अभ्यास डालना।
7. संस्कृत गद्य या पद्य खण्डों के हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता का विकास।
8. मातृभाषा के सरल वाक्यों के संस्कृत में अनुवाद की क्षमता विकसित करना।

(ख) मध्य स्तर पर संस्कृत–शिक्षण के उद्देश्य :

इस स्तर पर पहुँचते–पहुँचते छात्रों में संस्कृत का ज्ञान बढ़ जाता है। इस स्तर पर संस्कृत–शिक्षा के उद्देश्य निम्नांकित हो सकते हैं–

1. बड़े वाक्यों को समुचित अन्वितियों में रखकर पढ़ने का अभ्यास।
2. संस्कृत श्लोकों को यति, गति, मात्रा एवं विराम के साथ पढ़ने की आदत का विकास करना।
3. संस्कृत साहित्य का सामान्य बोध।
4. श्लोकों को कण्ठस्थ कर समय–समय पर उद्धरण देने की क्षमता का विकास।
5. संस्कृत से मातृभाषा में तथा मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद करने की योग्यता लाना।
6. संस्कृत में सरल वाक्यों के माध्यम से आत्मभाव प्रकाशन।
7. छात्रों के शब्द भण्डार की वृद्धि करना।
8. शुद्ध उच्चारणों की क्षमता विकसित करना।
9. विचार शक्ति को विकसित करना।
10. संस्कृत के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
11. देशभक्ति की भावनाओं को विकसित करना।
12. सरल संस्कृत वाक्यों को समझने योग्य बनाना।
13. महत्त्वपूर्ण श्लोकों को कण्ठस्थ करने के लिए प्रोत्साहित करना।

14. संस्कृत भाषा में लिखे हुए सरल गद्य–खण्डों को शुद्धतापूर्वक पढ़ने योग्य बनाना।
15. मातृभाषा के छोटे–छोटे वाक्यों को संस्कृत में अनुवाद करने योग्य बनाना।
16. छात्रों में यह क्षमता उत्पन्न करना कि वे कण्ठस्थ किए श्लोकों को बिना देखे शुद्ध–शुद्ध लिख सकें।
17. संस्कृत में साहित्यकारों एवं कवियों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना।
18. बालकों को श्रुतिलेख लिखने का अभ्यास कराना।
19. बालकों को इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत के सरल वाक्यों का अनुवाद अपनी मातृभाषा में कर सकें।

(ग) उच्च स्तर पर संस्कृत–शिक्षण के उद्देश्य :

उच्च स्तर पर संस्कृत–शिक्षण के उद्देश्य निम्नांकित हो सकते हैं–

1. संस्कृत साहित्य का बोध।
2. अनुसंधानात्मक दृष्टि का विकास।
3. मातृभाषा से संस्कृत में तथा संस्कृत से मातृभाषा मे अनुवाद करने की समुचित योग्यता।
4. आत्मभाव प्रकाशन की क्षमता का विकास, भाषण, प्रवचन आदि द्वारा।
5. पत्र–लेखन, निबन्ध–लेखन आदि की योग्यता विकसित करना।

संस्कृत भाषा की प्रकृति

संस्कृति केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा भी है अतः इसका नाम संस्कृत है। केवल संस्कृति ही एकमात्र भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नहीं किया गया है। संस्कृति को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है।

इस प्रकार से हम संस्कृत भाषा की प्रकृति को निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं –

- शब्द–रूप – विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक या कुछ ही रूप होते हैं, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 25 रूप होते हैं।
- द्विवचन – सभी भाषाओं में एक वचन और बहु वचन होते हैं जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है।
- सन्धि – संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि। संस्कृत में जब दो शब्द निकट आते हैं तो वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है।
- इसे कम्प्यूटर और कृत्रिम बुद्धि के लिये सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है।
- शोध से ऐसा पाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- संस्कृत वाक्यों में शब्दों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है। इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई भी सम्भावना नहीं होती। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं और क्रम बदलने पर भी सही अर्थ सुरक्षित रहता है। जैसे – **अहं गृह गच्छामि** या **गच्छामि गृहं अहम्** या **गृहंम अहं गच्छामि** ये तीनों ही ठीक है।

- देवनागरी एवं संस्कृत ही दो मात्र साधन हैं जो क्रमशः अंगुलियों एवं जीभ को लचीला बनाते हैं। इसके अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित, विज्ञान एवं अन्य भाषाएँ ग्रहण करने में सहायता मिलती हैं।

वर्णों के प्रकार

वर्ण दो प्रकार के होते हैं–

1. स्वर
2. व्यंजन

- स्वर वर्णों का उच्चारण बिना किसी सहायता के स्वतन्त्र रूप से होता है।
- व्यंजन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता से ही हो सकता है। कुल वर्णों की संख्या 46 हैं। संसार में जितनी भी भाषाएँ हैं, सभी इतने ही वर्णों के अन्तर्गत रखे जाते हैं। इन वर्णों में स्वर 13 हैं।

वर्णों के उच्चारण स्थान से उत्पन्न भेद निम्नलिखित हैं–

1. कण्ठ्य, 2. तालव्य, 3. मूर्धन्य, 4. दन्त्य, 5. ओष्ठ्य, 6. अनुनासिक, 7. कण्ठ–तालव्य, 8. कण्ठोष्ठ्य, 9. जिह्वामूलीय

महर्षि पाणिनि ने प्रत्येक वर्ण का उच्चारण की दृष्टि से जो स्थान निर्धारित किया है, वह निम्नांकित हैं–

सूत्र	वर्ण	उच्चारण स्थान
अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, :	कण्ठ
इचुयशानां तालुः	इ, च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालु
ऋटुरषाणां मूर्धा	ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष	मूर्धा
लृतुलसानां दन्ताः	लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स	दन्त
उपुपध्मानीयानाम् ओष्ठौ	उ, प, फ, ब, भ, म, ⨯प ⨯फ	ओष्ठ्य
ञमङणनानां नासिका	ञ, म, ङ, ण, न	नासिका
एदैतोः कण्ठतालुः	ए, ऐ	कण्ठ–तालु
ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	ओ, औ	कण्ठोष्ठ्य
वकारस्य दन्तोष्ठं	व	दन्तोष्ठ्य
जिह्वामूलीय	⨯क ⨯ख	

प्रयत्न – वर्णों के उच्चारण की रीति को 'प्रयत्न' कहते हैं। इनके दो भेद हैं–

1. आभ्यान्तर प्रयत्न
2. बाह्य प्रयत्न

1. आभ्यान्तर प्रयत्न – यह उस समय होता है जब उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के भीतर स्पर्श करती है। इसलिए कवर्ग, चवर्ग, तवर्ग और पवर्ग को स्पर्श वर्ण कहा गया है।

आभ्यान्तर प्रयत्न से उत्पन्न भेद निम्नांकित हैं–

1. **स्पृष्ट–** 'क' से 'म' तक के सभी स्पर्श वर्ण।
2. **ईषत् स्पृष्ट–** य, र, ल, व सभी अन्तःस्थ वर्ण।
3. **ईषत् विवृत–** श, ष, स, ह सभी उष्म वर्ण।
4. **विवृत–** अ, इ, ई, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ सभी स्वर।
5. **संवृत–** प्रयोग मे ह्रस्व 'अ', 'इ', 'उ' संवृत कहे जाते हैं।

2. बाह्य प्रयत्न– बाह्य प्रयत्न यह सूचित करता है कि वर्ण का उच्चारण करते समय उसे कितनी साँस के साथ ध्वनित करके मुख से बाहर निकालना पड़ता है।

बाह्य प्रयत्न के भेद निम्नलिखित हैं–

1. विचार, 2. संवार, 3. श्वास, 4. नाद, 5. घोष, 6. अघोष, 7. अल्पप्राण, 8. महाप्रण, 9. उदात्त, 10. अनुदात्त, 11. स्वरित।

जिन व्यंजनों में कुछ हकार की ध्वनि सुनाई देती है वे महाप्राण कहे जाते हैं तथा शेष 'अल्पप्राण' कहलाते हैं।

जिनकी ध्वनि गम्भीरता के साथ निकलती है उन्हें 'घोष' कहते हैं और जिनकी ध्वनि कोमल होती है, उन्हें अघोष कहते हैं।

'उदात्त', 'अनुदात्त' और 'स्वरित'– ये तीनों ही स्वरों के भेद हैं और इनका प्रयोग सिर्फ वेदों में ही होता है।

शुद्ध उच्चारण के लिए कुछ आवश्यक बातें

शिक्षक को चाहिए कि शुद्ध उच्चारण के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें–

1. छात्र यदि अशुद्ध उच्चारण करता हो तो उसे तुरन्त टोक दिया जाए तथा उसका शुद्ध रूप बतलाकर उससे बार–बार अभ्यास करवाया जाए क्योंकि अभ्यास से उच्चारण शुद्ध हो जाता है।
2. वर्णों के उच्चारण–स्थान का ज्ञान करा देना चाहिए।
3. नये शब्दों के उच्चारण में हर अक्षर पर रुक–रुककर सिखाना चाहिए।

4. जो शब्द कठिन हो उसे श्यामपट पर लिखकर उच्चारण करना चाहिए।
5. यदि पद सन्धि–युक्त है तो प्रथम समास–विग्रह तथा सन्धि विच्छेद करा देना चाहिए। फिर उच्चारण का अभ्यास करावें।
6. शिक्षक को धैर्य से काम लेना चाहिए क्योंकि छात्र बार–बार गलती करते ही हैं।
7. केवल एक वर्ण का नहीं बल्कि सम्पूर्ण वाक्य का अथवा शब्दों का उच्चारण कराया जाए।
8. छात्रों के व्यक्तिगत उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
9. कभी–कभी सामूहिक उच्चारण भी कराना चाहिए।
10. आवृत्ति एवं पुनरावृत्ति विधि के द्वारा शुद्ध उच्चारण करना सिखाया जाए।
11. समस्त वर्णों का उच्चारण करते समय इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि वे एक दूसरे से नहीं मिलें।
12. शिक्षक को अपना उच्चारण भी शुद्ध रखना चाहिए।

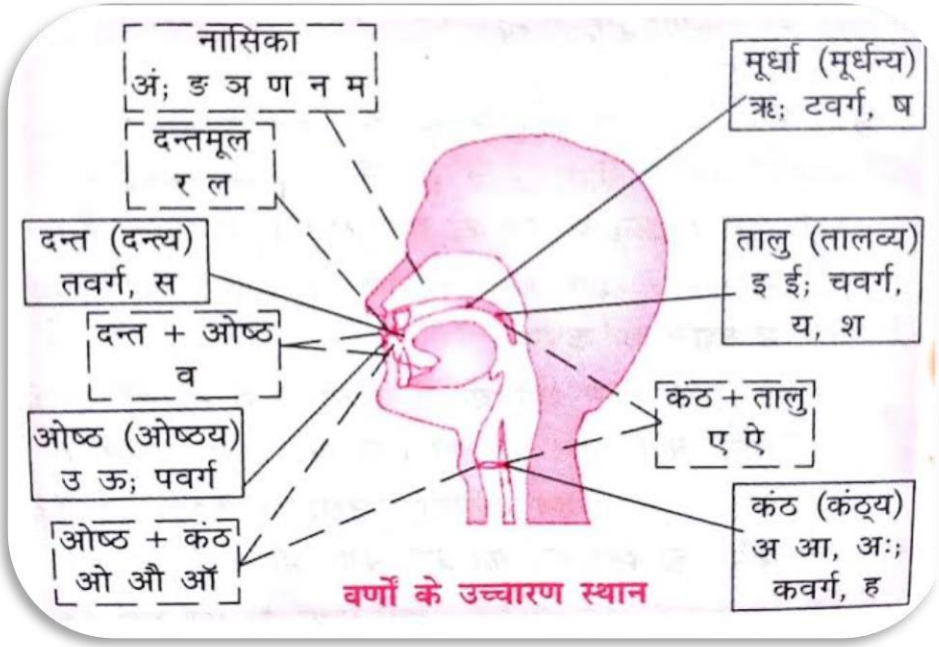

Day - 1

चित्ताकर्षण (Ice Breaker)

आमुखी समूह बनाना :

नियम

1. प्रत्येक टीम में 8 सदस्य होंगे।
2. प्रत्येक सदस्य दिए गए पेपर में अपना कार्य कर पेपर को आगे बढ़ाएं।
3. आप केवल अपना सौंपा गया कार्य करेंगे, पहले सदस्य द्वारा किए गए कार्य को यथावत रखेंगे।

कैसे करें ...

टीम में से एक सदस्य का चुनाव करें जिसका चेहरा टीम के द्वारा बनाया जावेगा।

सदस्य – 1 यह सदस्य मॉडल होगा।

सदस्य – 2 चेहरे का आउट लाइन बनाएँ।

सदस्य – 3 चेहरे के बाल बनाएँ।

सदस्य – 4 चेहरे की आँखें व भौहें बनाएँ।

सदस्य – 5 नाक बनाएँ।

सदस्य – 6 होठ बनाएँ।

सदस्य – 7 कान बनाएँ।

सदस्य – 8 चेहरे को अंतिम रूप प्रदान करें। आप Accessories का उपयोग कर सकते हैं।

इस क्रियाकलाप की व्याख्या करें।

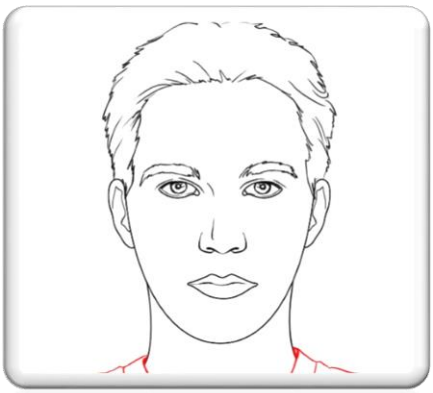

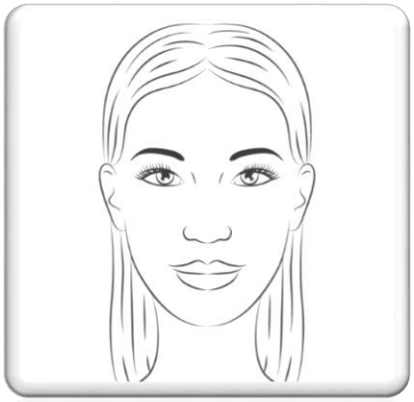

योग्यता आधारित ढांचा

बच्चे विद्यालय प्रवेश पूर्व एक स्वतंत्र वातावरण से आए होते हैं जहाँ उन्हें सब कुछ अपने तरीके से करने की आजादी होती थी इसलिए उन्हें मजा आता था। अतः कक्षा में भी इस तरह की कुछ गतिविधियों के साथ अध्ययन कराया जाए जिससे आनंद के साथ–साथ सीखना हो सकें। वैसे तो बच्चे अपने आसपास के वातावरण, के साथ जुड़ना शुरू कर देते हैं। इसलिए उनके अनुभवों, अवलोकनों को सीखने का आधार बनाया जाना चाहिए। भाषा की कक्षा में कविता, कहानियों पर बातचीत, घटनाओं के वर्णन, अभिनय आदि के द्वारा सीखने–सिखाने के अवसर देने से बच्चों की क्षमताओं के विकास को बल मिलता है।

आज शिक्षक–शिक्षा (Teacher Education) के कार्यक्रम में कुछ बदलाव आए है। आइए इस बदलाव पर चर्चा करने के लिए **एन.सी.एफ. 2005** पर नजर डाले – (पृष्ठ –122)

शिक्षक कक्षा में शिक्षण के लिए आवश्यक पूर्व तैयारी करें जिससे वे निम्न बिन्दुओं के संदर्भ में अपनी समझ विकसित कर सकें –

- बच्चों को उनके सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों में समझ सकें।
- शिक्षक निरंतर सीखने वाले हों, उन्हें विद्यार्थी को शिक्षण प्रक्रिया के सक्रिय भागीदार के रूप में देखना चाहिए।
- शिक्षक की भूमिका ज्ञान के स्रोत के बदले एक सहायक की होनी चाहिए जो सूचना को ज्ञान/ बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करें।
- एक महत्वपूर्ण तब्दीली ज्ञान की अवधारणा में आई है। ज्ञान को एक सतत् प्रक्रिया माना जाने लगा है। जो वास्तविक अनुभवों के अवलोकन, पुष्टिकरण आदि से उत्पन्न होता है।
- एक और बड़ा बदलाव शैक्षिक प्रक्रियाओं पर सामाजिक संदर्भों के प्रभाव से संबंधित है, वह है सीखना। सीखना उस सामाजिक वातावरण/ संदर्भ से बेहद प्रभावित होता है जहाँ से विद्यार्थी और शिक्षक आते हैं।

हम शिक्षकों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि स्कूल और कक्षा का सामाजिक वातावरण सीखने की प्रक्रिया यहाँ तक की पूरी शिक्षा प्रक्रिया पर असर डालता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं के साथ–साथ विद्यार्थी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भों की ओर अधिक बल देने की आवश्यकता है।

आइए महत्वपूर्ण बदलावों पर एक नजर डालते हैं :

महत्वपूर्ण बदलाव

पहले	वर्तमान में
• शिक्षक केंद्रित, स्थिर डिज़ाइन	• शिक्षार्थी केंद्रित, लचीली प्रक्रिया
• शिक्षक का निर्देश और निर्णय	• शिक्षार्थी की स्वायत्ता
• शिक्षक का मार्गदर्शन और प्रबोधन	• शिक्षार्थी को सहयोग द्वारा सीखने को प्रोत्साहन
• निष्क्रिय भाव से सीखना	• सीखने में सक्रिय भागीदारी
• चारदीवारी के अंदर सीखना	• विस्तृत सामाजिक संदर्भों में सीखना
• ज्ञान ''प्रदत्त'' और स्थिर है	• ज्ञान विकसित होता है, रचा जाता है
• अनुशासन केंद्रित	• बहु–अनुशासनात्मक शैक्षणिक दृष्टि
• रैखिक अनुभव	• बहुविध एवं विभिन्न अनुभव
• मूल्यांकन, संक्षिप्त कम	• बहुविध, सतत्

योग्यता की रूपरेखा

आपने देखा– ये महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं जो यह मांग करते हैं कि हम भी परिवर्तन को स्वीकारें और अपनी बदलती भूमिका, ज्ञान के स्रोत के बदले सुविधादाता के रूप में अपनी क्षमताओं का विकास करें, जिससे हम ऐसे अवसर रच पाए, जिससे बच्चो में अर्न्तनिहित क्षमताएँ बाहर आएँ उनका विकास हो। हम पारंपरिक ढाँचे से योग्यता आधारित ढांचे की ओर कदम बढ़ाएं।

पारंपरिक ढाँचे से योग्यता आधारित ढाँचे की ओर जाने में महत्वपूर्ण परिवर्तन –

पारंपरिक ढांचा

1. मानकीकृत / Standardized:
   निर्देश पूरे वर्ग के लिए मानकीकृत है और सीखने के परिणामों को कक्षावार–नामित किया गया है।
2. सीखने का तरीका / Learning approach:
   शिक्षक केंद्रित।
3. वास्तविक जीवन में जुड़ाव नहीं / No real life application : केवल कुछ LO वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल को बढ़ावा दे सकते है।
4. अलग–अलग / Segregated : पाठ्यक्रम के अंशों का विभिन्न अंतरालों पर परीक्षण किया जाता है।

योग्यता आधारित ढांचा

1. अनुकूलित / Customized:
   निर्देश अलग–अलग सीखने के परिणामों के साथ छात्र की जरूरतों से मेल खाने के लिए अनुकूलित है।
2. सीखने का तरीका / Learning approach:
   विद्यार्थी केंद्रित
3. वास्तविक जीवन से जुड़ाव / Real life application : 21वीं सदी के कौशल और वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल के लिए संरेखित।
4. पूरक / Complementary: फॉर्मेटिव आकलन योग्यतात्मक आकलन को पूरक करता है।

कुछ क्षमताएं जिनका विकास बच्चों में करना आवश्यक है, वे स्तरवार यहाँ दी जा रहीं हैं।

स्तर 1 से 4

स्तर 1

तथ्यों को याद करने की क्षमता

(The ability to recall facts)

स्तर 2

वैचारिक ज्ञान, या तथ्यों को संदर्भ में रखने की क्षमता।

(Conceptual knowledge or context)

स्तर 3

उपयुक्त रणनीति बनाने की सोच का उपयोग निर्णय लेने या तर्क में करना

(Employing strategic thinking through the use reasoning or decision making.)

स्तर 4

जानकारी को संश्लेषित करने या वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों में लागू करने के लिए विस्तारित सोच का उपयोग करना ।

(Using extended thinking to synthesize information or apply it to real world application.)

ऊपर जिन महत्वपूर्ण बदलावों और स्तरानुसार क्षमताओं की बात की गई है। अब देखें कि एन.सी.एफ. 2005 में स्कूली शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य कौन से हैं ?

सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के मद्देनज़र, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एन. सी.एफ. 2005) में स्कूली शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों को पहचाना गया है ?

- बच्चों को उनके विचार और कार्य में स्वतंत्र होना और दूसरों के प्रति और उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाना।
- बच्चों को एक लचीली और रचनात्मक तरीके से नयी स्थितियों का सामना करने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए सशक्त बनाना।
- बच्चों में विकास की दिशा में काम करने और आर्थिक प्रक्रियाओं और सामाजिक परिवर्तन में योगदान करने की क्षमता का विकास करना।

वाक्य रचना

पुरुषः/वचनम्	एकवचनम्		द्विवचनम्		बहुवचनम्	
प्रथम पुरुषः	1	सः	2	तौ	3	ते
		सा		ते		ताः
		तत्		ते		तानि
मध्यम पुरुषः	4		5		6	
	त्वम्		युवाम्		यूयम्	
उत्तम पुरुषः	7		8		9	
	अहम्		आवाम्		वयम्	
प्रथम पुरुषः	1		2		3	
	पठति		पठतः		पठन्ति	
मध्यम पुरुषः	4		5		6	
	पठसि		पठथः		पठथ	
उत्तम पुरुषः	7		8		9	
	पठामि		पठावः		पठामः	

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्कूलों को समानता, गुणवत्ता और लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। देश की विविधता को देखते हुए, विद्यार्थियों के संदर्भों को कक्षा में लाना महत्वपूर्ण है। **एन.सी.एफ. 2005 पाठ्यपुस्तकों से परे जाने के लिए शिक्षकों की भूमिका पर जोर देती है ताकि बच्चे अपने स्वयं के अनुभवों से रोल प्ले, ड्राइंग, पेंटिंग, ड्रामा, शैक्षिक भ्रमण और प्रयोगों के संचालन के माध्यम से सीख सकें।**

एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार मूल्यांकन को अधिगम और कक्षा की अंतर्निहित प्रक्रियाओं के रूप में देखने की जरूरत पर भी जोर दिया गया है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक अपने परीक्षण के परिणामों की प्रतीक्षा करने, रिकॉर्डिंग तथा रिपोर्टिंग पर समय व्यतीत करने के बजाय तत्काल सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से अपने तरीके से बच्चों का निरंतर और व्यापक रूप से मूल्यांकन करें। इसके अलावा, इसमें न केवल गणित, भाषा, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान बल्कि जीवन कौशल, सामाजिक, व्यक्तिगत, भावनात्मक और मनोगतिक कौशल सीखने पर भी जोर दिया जाता है।

यहाँ योग्यता के 4 स्तर दिये जा रहे है, जिससे आप शिक्षण के साथ–साथ बच्चों की शैक्षिक प्रगति की पहचान कर सकें।

स्तर 1 से 4

प्रत्येक योग्यता पर छात्रों द्वारा सीखा और प्रदर्शित किए जाने वाले कौशल का सेट –

1
याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करके खोजें, लेबल करना, वर्णन करना

2
समझना, व्याख्या करना, चित्रण करना, संक्षेप करना, मेल करना।

3
लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना

4
मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना

Chapter	Sub-topics	Level 1	Level 2	Level 3	Level 4
पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे :		याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना, लेबल करना, वर्णन करना	समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
द्वादशः पाठः अस्माकम् आहारः	• पठन–पठन अनुवाद • भाषिक कार्य • व्याकरणिक कार्य • प्रश्नोत्तर अभ्यास	• कठिन शब्दों के अर्थो को जान सकेगा। • संतुलित एवं पौष्टिक आहार के विषय में जान सकेगा। • LS 601 • स्थानीय भाषा के शब्दों यथा रांधना, खाना, चलना, खेलना शब्दों को संस्कृत में व्यक्त करते हैं।	• दुध में पाये जाने वाले खनिज तत्वों को जान पायेगा। • दूध, दही, एवं घी के उपयोग के बारे में जान सकेगा। • LS 609 • किसी पाठ्य वस्तु की बारिकी से जाँच करते हुए उनमें दिये विशेष बिन्दु को खोजते हैं। अनुमान लगाते हैं। निष्कर्ष निकालते हैं।	• घर में उपयोग होने वाले सब्जियों का चित्र बनाकर संस्कृत में नाम लिख सकेंगे। • घर में उपयोग होने वाले फलों का चित्र बनाकर संस्कृत में नाम लिख सकेंगें। • LS 602 • दैनिक जीवन में प्रयुक्त सामग्रियों के नाम संस्कृत में प्रस्तुत करते हैं जैसे– सब्जी–शाकम, फल–फलम्, पेड़–वृक्षः, छत्ता–छत्रम्, पानी–जलम्, पेन–लेखनी आदि।	• दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले सामग्रियों को सूचीबद्ध कर उनके गुणों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेगा। • अन्न वर्ग का संस्कृत नाम संकलन कर सकेंगे। • LS 616

प्रादर्श पाठ योजना

दिनाङ्क ..... कक्षा – षष्ठी कालांश .....

विद्यालय ..... विषय – संस्कृतम्

पाठ का नाम – अस्माकम् आहारः

पाठ्य–प्रकरण – अस्मिन् संसारे.....अशक्ताश्च भविष्यन्ति।

1. अधिगम प्रतिफल :

LOS 607- संस्कृत के नये–नये शब्दों के अर्थ संग्रह कर शब्द भण्डार में वृद्धि करते हैं।

2. शिक्षण सहायक सामग्री :

1. पाठ्य–पुस्तक, श्यामपट, चाक,
2. फलों एवं सब्जियों के चित्र।
3. दूध, दही, मक्खन से भरे पात्रों का चित्र।
4. अनाजों से भरे पात्रों का चित्र।

3. शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया :

a. पूर्वज्ञान :– 1. छात्र खाद्य–पदार्थों से परिचित हैं।
2. छात्र वैद्य के कार्यों से परिचित हैं।
3. छात्र जानते हैं कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उचित भोजन आवश्यक है।

पाठ्य वस्तु से सम्बद्धता–

क्रमांक	शिक्षक के प्रश्न	छात्र द्वारा संभावित उत्तर
1.	आप कौन–कौन से फलों के नाम जानते हैं ?	आम, अमरूद, सेब, केला अंगूर, बेर जामुन, अनार इत्यादि।
2.	आप प्रतिदिन भोजन क्यों करते हैं ?	पेट भरने के लिए भोजन करते है।
3.	संतुलित आहार किसे कहते हैं ?	निरुत्तर।

उद्देश्य कथन :– बच्चों, हम जानते है, कि हमें जब भूख लगती है तब हम भोजन करते हैं, तो हमारे भोजन में क्या–क्या और वह कैसा होना चाहिए ? इस विषय में आज हम संस्कृत पाठ्य पुस्तक के 'अस्माकम् आहारः' नामक पाठ का अध्ययन करेंगे।

b. शिक्षण–अधिगम प्रविधियाँ– आदर्श एवं अनुकरण पठन विधि, अनुवाद विधि, निगमन विधि।

c. बैठक व्यवस्था – कक्षा कक्ष में बच्चे क्रमबद्ध रूप से बैठेंगे, जिसमें दिव्याङ्ग बच्चों को प्रथम पंक्ति में बैठाया जाएगा, आवश्यकतानुसार समूह विभाजन किया जाएगा।

d. स्थान – कक्षाकक्ष के भीतर

सामान्य उद्देश्य :–

1. संस्कृत भाषा का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
2. संस्कृत भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न होगी।
3. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।
4. सरल संस्कृत वाक्यों को सुनकर अर्थ ग्रहण कर सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य :–

1. आहार के महत्त्व को समझ सकेंगे।
2. आहार के नियमों का पालन कर सकेंगे।
3. सन्तुलित आहार ग्रहण करने के लिए प्रेरित होंगे।
4. संस्कृत शब्दों/वाक्यों को शुद्धतापूर्वक पढ़ सकेंगे।
5. पाठ्यांश में प्रयुक्त व्याकरणिक तत्वों से परिचित होंगे।

विषय–वस्तु

क्र.	शिक्षण बिन्दु/कौशल	शिक्षण विधि/गतिविधि (शिक्षक–क्रिया)	छात्र क्रिया	श्यामपट कार्य
1.	श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास करना।	1. सुनो और बोलो विधि से शिक्षक द्वारा उचित गति एवं लय के साथ शुद्धतापूर्वक आदर्श वाचन करना। 2. शिक्षक द्वारा छात्रों को अनुकरण वाचन करने का निर्देश देना। 3. शिक्षक द्वारा अशुद्धि संशोधन एवं पुनः आदर्शवाचन करना।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे। छात्र उचित गति–यति के साथ अनुकरण वाचन करेंगे। छात्र पुनः समवेत स्वर में अनुकरण वाचन करेंगे।	छात्रों द्वारा अशुद्ध उच्चारण किये जाने वाले शब्दों को शिक्षक श्यामपट पर लिखेंगे
2.	कठिन शब्दों का अर्थबोध कराना	काठिन्य निवारण विधि से शिक्षक द्वारा छात्रों से कठिन शब्दों को आमंत्रित करना एवं उनका अर्थ बताकर श्यामपट पर लिखना। (गतिविधि कराना) कक्षा के बच्चों को तीन समूह में बाँटना। प्रत्येक समूह, पाठ में आये शब्दों को दो भाग में लिखेंगे– एक भाग में ऐसे शब्द होंगे जिनका अर्थ बच्चे जानते हैं तथा दूसरे भाग में शब्दों को लिखेंगे जिनके अर्थ नहीं जानते हैं। अब प्रत्येक समूह से एक प्रतिनिधि अपने समूह द्वारा संकलित शब्दों को बताएगा, तथा अन्य समूह के सदस्य अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे। जिन कठिन शब्दों के अर्थ छात्र नहीं जानते,	छात्र कठिन शब्दों का अर्थ पूछेंगे, अर्थ समझेंगे एवं अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे। छात्र गतिविधि में भाग लेंगे और शिक्षक के निर्देशानुसार कार्य करेंगे।	अस्मिन् = इसमें प्राणिनः = प्राणी (बहुवचन) गृह्णन्ति = ग्रहण करते हैं उपदिशन्ति = उपदेश देते हैं। यत् = जो, कि सद्यः = तुरन्त पौष्टिकम् = बल बढ़ाने वाला

		उनको शिक्षक श्यामपट में लिखकर अर्थ बताएंगे।		
3.	पाठ्यांश की समझ का विकास करना	अनुवाद विधि – शिक्षक पाठ्यांश का हिन्दी में अनुवाद बताकर पाठ के केन्द्रीय भाव को स्पष्ट करेगा।	छात्र पाठ्यांश में निहित भावों को समझेंगे	
4.	लेखन कला का विकास	लेखन विधि– शिक्षक द्वारा छात्रों को पाठ्यांश देखकर लिखने का निर्देश देना एवं छात्रों को परस्पर जाँचने का अवसर देना।	छात्र पाठ्यांश का शुद्धतापूर्वक लेखन करेंगे एवं लेखन में हुई त्रुटियों में सुधार करेंगे।	
5.	भाषिक तत्त्वों का विकास	निगमन विधि– उपसर्गः– जो शब्दांश, शब्द के पूर्व जुड़कर शब्द के अर्थ को बदल देता है, या अर्थ विशेष कर देता है, उसे उपसर्ग युक्त शब्द कहते हैं। आहारः प्रहारः प्रदेशः	छात्र भाषिक तत्त्वों को समझने का प्रयास करेंगे एवं श्यामपट से देखकर अपनी कापी में लिखेंगे।	आ+हारः = आहारः उप+दिशन्ति = उपदिशन्ति सम्+वर्ध्यन्ते = संवर्ध्यन्ते

4. आकलन :

बोध प्रश्न :

1. मानवस्य आहारः कीदृशः भवेत्?
   (मानव का आहार कैसा होना चाहिए ?)
2. जनाः कृशकायाः अशक्ताश्च किमर्थं भवन्ति?
   (लोग दुबले और अशक्त क्यों हो जाते है ?)
3. शिशोः कृते मातुः दुग्धं किमर्थम् आवश्यकम् अस्ति?
   (शिशु के लिए माँ का दूध क्यों आवश्यक है ?)

अभ्यास प्रश्न : विलोम शब्दों का मेल कीजिए

क	ख
1. शिशुः	दानवः
2. सद्यः	पितुः
3. मातुः	विलम्बः
4. दुर्बलः	वृद्धः
5. मानवः	सबलः

5. सार–कथन : शिक्षक द्वारा पाठ्य के विषय–वस्तु को सारांश में पुनः प्रस्तुत करना।

खाद्य वस्तुओं के नामों की सूची तालिका के आधार पर बनाइए

क्रमांक	फल	सब्जी	अनाज
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

6. पाठ–योजना के प्रभाव पर शिक्षक द्वारा समीक्षा : शिक्षक, शिक्षण के उपरांत शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं, कठिनाइयों एवं प्रभाव का वर्णन करें।

Task Distribution Matrix- TDM

आकलन की तैयारी के लिए प्रश्नों का निर्माण एक आवश्यक प्रक्रिया है जिससे विद्यार्थी की क्षमताएं पता चले। आइए देखे कि ब्लूप्रिंट या TDM में क्या–क्या सूचनाएँ/जानकारी निहित होती है।

- कक्षा विषय
- पाठ्य सामग्री
- विभिन्न शैक्षिक/योग्यताओं पर प्रश्न के विवरण जैसे स्तर Level से 1 – 4
- प्रश्नों के प्रकार जैसे अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय आदि।
- प्रसंग/संदर्भ : ज्ञानात्मक, भाषिक, व्याकरणिक, बोधात्मक।
- अनुक्रिया के प्रकार जैसे – (i) Selected (चयनित), (ii) Constructed (रचनात्मक)

हम कह सकते हैं TDM एक ऐसा ढाँचा या फ्रेमवर्क है जो पाठ्यसामग्री (Syllabus) के प्रत्येक प्रश्नों के स्तरों, संदर्भों एवं प्रतिक्रिया के प्रकारों को बताता है।

यहाँ प्रतिक्रिया के प्रकार को थोड़ा विस्तार दिया जा सकता है –

1. **चयनित (Selected) :** इसके अंतर्गत बच्चों को उत्तरों के चुनाव करने होते है जैसे –
    - बहुविकल्पीय प्रश्न
    - रिक्त स्थान भरें
    - सही गलत उत्तर का चुनाव करें।

2. **निर्माण (Constructed) :** इसके अंतर्गत प्रश्नों के उत्तर बच्चों को स्वयं निर्मित करने होते है, जैसे – अति लघुउत्तरीय प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

संदर्भ : वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ जिनके आधार पर प्रश्न तैयार किए जाते है।

1. ज्ञानात्मक (व्यक्तिगत) – विषयवस्तु के संबंध में निहित तथ्यों, विवरणों को जानना।
2. भाषिक (व्यावसायिक) – अनुवाद (भाषान्तर), पर्यायवाची, विलोम, पदों को जानना। कर्तृपद, क्रियापद, अव्यय एवं वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों को पहचानना।
3. व्याकरणिक (वैज्ञानिक) – व्याकरणिक तत्वों का संश्लेषण–विश्लेषण व अनुप्रयोग करना। जैसे – संधि, समास, कृदन्त, तद्धित आदि।
4. बोधात्मक (सामाजिक) – विषय–वस्तु/पाठ के आधार से उसमें निहित शिक्षा/बोध को समझना और व्यक्त करना तथा अन्य तथ्यों के साथ तुलना करना/अनुप्रयोग करना।

TDM – Sanskrit – Class 8

		Competency level योग्यता विस्तार				Context प्रसंग/संदर्भ				Response Type अनुक्रिया प्रकार		Type of questions प्रश्नो के प्रकार			
	Lo Tagged	I	II	III	IV	Social	Personal	Vocational	Educational	Selected	Constructed	VSA 1 mark	SA 2 mark	LA 3 mark	VLA 5 mark
sec -A Reading					01 x 05 = 05						01				01
sec -B Writing			01 x 02 = 02	01 x 05 = 05 01 x 03 = 03							03		01	01	01
sec - c Grammar		04 x 01 = 04 01 x 02 = 02	02 x 02 = 04							04	03	04	03		
Sec - D Literature		01 x 01 = 01	01 x 02 = 02 03 x 03 = 09	01 x 03 = 03						01	05	01	01	04	
Total QS		06	07	03	01							05	05	05	02
Total; Marks		07	17	11	05							05	10	15	10
Question - Wise %		35	41	18	06										
Marks - Wise		17.5	42.5	27.5	12.5										

1. पाठयवस्तु (पाठ) आधारित अंक 15 अंक (37.5%)
2. पाठ आधारित अंक 15 अंक (37.5%)
3. रचनात्मक (सृजनात्मक) 10 अंक (25%)

टीप – व्याकरण पाठ आधारित ही होंगे व्याकरण खंड से नहीं

विषय कोड | 8 | 0 | 5 | 1 |

राज्य स्तरीय आकलन (SA-1)

सत्र 2019–20

कक्षा – 8

विषय – संस्कृत हिन्दी माध्यम

समय – 02:30 घंटे पूर्णांक – 40

परीक्षार्थी आई डी

परीक्षार्थी का नाम ..... शाला का नाम .....

प्राप्तांक (अंकों में) (शब्दों में) .....

हस्ताक्षर प्रधान पाठक ..... हस्ताक्षर निरीक्षक .....

केवल मूल्यांकन हेतु										
PAPER CODE										
STUDENT CODE										

1		10		केन्द्राध्यक्ष हस्ताक्षर एवं सील	हस्ताक्षर मूल्यांकनकर्ता
2		11			
3		12			
4		13			
5		14			
6		15			
7		16			
8		17		दिनांक:	दिनांक:
9					
कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained)					

निर्देश :– 1. इस प्रश्न पत्र में पठन, लेखन, व्याकरण एवं साहित्य खण्ड दिये गये हैं।

2. सभी खण्डों के प्रश्नों को हल करना अनिवार्य है।

3. दिये गये प्रश्नों के उत्तर इसी प्रश्न पत्र में ही हल कीजिए।

(खण्ड अ– पठनम्)

प्रश्नः 01 –अपठितानुच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखतु– **5 अंक**

(अनुच्छेद को पढ़कर एक पद में प्रश्नों के उत्तर लिखिए)–

एकदा एकः लोभी कुक्कुरः नदीतटम् अगच्छत्। तस्य मुखे एका रोटिका आसीत्। नद्यां जले सः स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्। सः मनसि अचिन्तयत्– ''अयं कश्चिद् अपरः कुक्कुरः अस्ति। अहं अस्य कुक्कुरस्य रोटिकाम् अपहरामि।'' इति विचिन्त्य सः निजमुखं विस्फारितवान्। एवं कृते सति तस्य रोटिका जले अपतत्। तदा सः श्वानः अतीव निराशः अभवत्। अतः कदापि लोभः न कर्तव्यः।

प्रश्नाः –

अ. कुक्कुरस्य मुखे का आसीत्?

ब. ''श्वानः अतीव निराशः अभवत्'' इस वाक्य में प्रयुक्त विशेषण व विशेष्य पद को चुन कर लिखिए?

स. ''सः मनसि अचिन्तयत्'' इस वाक्य में 'सः' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

द. ''सरिति'' इस पद के लिए अनुच्छेद में कौन सा पर्याय पद प्रयुक्त हुआ है?

इ ''सः श्वानः अतीव निराशः अभवत्'' इस वाक्य में कर्ता पद को लिखिए।

उत्तराणि–

अ. .....

ब. .....

स. .....

द. .....

इ. .....

(खण्ड ब –लेखनम्)

प्रश्नः 02 –स्वपरिचयम् आधारितानि रिक्तस्थानानि पूरयत– **2 अंक**

(स्वपरिचय–आधारित रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए)

––––––––––––––मम नाम अस्ति। मम पितुः नाम––––––––––अस्ति। अहं अष्टम्यां––––––––––पठामि। मम माता गृहिणी अस्ति। सा––––––––––––––––––करोति।

प्रश्नः 03 –रिक्तस्थानानि मञ्जूषातः उचितपदान् चित्वा पूरयतु। **3 अंक**

(मंजूषा में दिये गये पदों को उचित रिक्त स्थानों में भरिए)

पर्यन्तम्, दातुं, आवेदनम्, एतदर्थं, शालाम्, आवेदयामि

सेवायाम्,

प्रधानाध्यापकः

शा. पू. मा. विद्यालय, झलमला

विषय :–अवकाशहेतोः ––––––।

महोदय!

सविनयम् ––––––––––––––– यदहं शीतज्वरेणपीडितोऽस्मि। अतः––––––––––––आगन्तुम् असमर्थोऽस्मि।––––––– 15.12.2019 दिनांङ्कात् 17.12.2019 –––––––अवकाशं––––––––––––कृपां करोतु।

भवतः आज्ञाकारी शिष्यः

राघवः

प्रश्नः 04 –चित्रं ध्यानेन पश्यतु। अधः चित्राधारितानि पञ्च हिन्दीवाक्यानि लिखितानि। तानि संस्कृतभाषया अनुवादं कुरूत। **5 अंक**

आ + रोप् –रोपना/लगाना, कुठारं–कुल्हाड़ी, स्कंध – कंधा,

काटना–छिद्, सिञ्च्–सींचना, रक्ष् – रक्षाकरना

अ. एक बालक पौधा लगा रहा है।

ब. एक बालिका उसे जल से सींच रही है।

स. एक मनुष्य के कन्धे पर एक कुल्हाड़ी है।

द. वह पेड़ को काटना चाहता है।

इ. दो बालक उस पेड़ की रक्षा कर रहे हैं।

अथवा

स्वविद्यालयस्य विषये दशवाक्येषु संस्कृतभाषया वर्णनं कुरूत।

उत्तरम् – .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(खण्ड स – व्याकरणम्)

प्रश्नः 05 – 'इत्युच्यते' अस्यपदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति– **1 अंक**

(अ) इति + उच्यते (ब) इत्य + उच्यते (स) इत् + युच्यते

उत्तरम् – .....

प्रश्नः 06 – 'विस्मरिष्यति' पदे उपसर्गः अस्ति । **1 अंक**

(अ) इष्यति (ब) वि (स) स्मृ

उत्तरम् – .....

प्रश्नः 07 – ''मानवजीवने'' पदस्य समासविग्रहः अस्ति– **1 अंक**

(अ) मानवेजीवने (ब) मानवस्य जीवने (स) मानवंजीवने

उत्तरम् – .....

प्रश्नः 08 – 'विहाय' पदे प्रत्ययःअस्ति? **1 अंक**

(अ) यत् (ब) क्त्वा (स) ल्यप्

उत्तरम् – .....

प्रश्नः 09 –कोष्ठकात् चित्वा उचित संख्ये लिखतु। **2 अंक**

(कोष्ठक से चुनकर उचित संख्या लिखिए)

(34, 45, 24, 35, 44, 25)

(अ) चतुर्विंशति ☐ (ब) पञ्चविंशति ☐

उत्तरम् – .....

प्रश्नः 10 –नीचे लिखे शब्दरूपों के मूलशब्द व विभक्ति लिखिए (कोई दो) **2 अंक**

शब्दरूपम्	मूलशब्दः	विभक्ति
मनांसि	———	———
तम्	———	———
राज्ये	———	———

प्रश्नः 11 – अधोलिखितेषु धातुरूपेषु रिक्तस्थानानि पूरयत। (कोऽपि द्वे) **2 अंक**

(नीचे लिखे धातुरूपों में रिक्तस्थानों को पूरा कीजिए) (कोई दो)

अ. नश्यति	————————	————————
ब. ————————	————————	अचोरयन्
द. ————————	लेखिष्यथः	————————

(खण्ड द – पाठप्रकरणम्)

प्रश्नः 12 –इदं सुजीवनस्य कुञ्जिका अस्ति। **1 अंक**

(अ) कुशालसनम् (ब) परशासनग्म् (स) अनुशासनम्

उत्तरम् – .....

प्रश्नः 13 –मञ्जूषायां प्रदत्तान् शब्दान् आधृत्य पाठ्यपुस्तकात् एकः श्लोकः लिखतः। **2 अंक**

(मंजूषा में दिये शब्दों को आधार लेकर पाठ्यपूस्तक से एक श्लोक लिखिए।)

नरके, दावाग्नौ, चाब्धौ , परशासनम्

उत्तरम् – .....

.....

अथवा

मञ्जूषात् शब्दानचित्वा श्लोकं सम्पूरयत।

(मंजूषा के शब्दों को चुनकर ठीक तरह श्लोक को पूरा कीजिए।)

भ्राता, प्रजापतेः, ब्रह्मणा माता

आचार्यो————————मूर्तिः पितामूर्तिः ————————।

————————पृथिव्याः मूर्तिस्तु————————मूर्तिरात्मनः।

प्रश्नः 14 –अनुच्छेद पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत– **3 अंक**

(अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए)

ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थित भवति।ग्राम प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति वनेषु नगरेषु च तथा जीवनं न भवति वस्तुतः ग्रामाः वननगरयोः मध्ये सन्ति। ग्रामीणः प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति। ते च प्रातः कालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति।

प्रश्नाः –

अ. अनुच्छेदे 'कृषकाः' पदस्य किं पर्यायपदम् प्रयुक्तम्?

(अनुच्छेद में 'कृषक' शब्द के लिए कौन सा पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त हुआ है?)

ब. ग्राम्यजीवनं कथं भवति?

स. ''वनेषु नगरेषु च तथा जीवन न भवति'' इस वाक्य में प्रयुक्त अव्यय पदों को छाँटकर लिखिए।

उत्तराणि– अ. .....

ब. .....

.....

स. .....

.....

प्रश्नः 15 – श्लोकस्य हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत– **3 अंक**

सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

उत्तरम् – .....

.....

.....

प्रश्नः 16 – अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत। **3 अंक**

(संस्कृत भाषा से उत्तर लिखिए)

अ. मधुमक्खियाँ क्या करती हैं?

ब. घड़ा कैसे भरता है?

स. श्यामा ने क्या संचय किया था।

उत्तरम् – .....

.....

.....

अथवा

''राष्ट्रीयः सञ्चयः'' पाठाधारेण 'धन–सञ्चय–योजना' विषये एकम् आलेखं लिखत।

(पाठ के आधार से 'धन–संचय–योजना' पर एक आलेख लिखिए।) (शब्द सीमा–लगभग 50)

उत्तरम् – .....

.....

.....

.....

.....

प्रश्नः 17 – 'चतुरः वानरः' पाठाधारेणमकरस्य मूढतया वानरस्य चातुर्येन च संबंधिते कथने मातृभाषया लिखत। **3 अंक**

(पाठ के आधार से मगर की मूर्खता और वानर की चतुराई से संबंधित कथनों को हिन्दी भाषा से लिखिए)

उत्तरम् – .....

.....

.....

.....

.....

पाठ और लेखन के संदर्भ में

व्यक्तिगत	• ऐसे ग्रंथ जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत हितों को पूरा करने के उद्देश्य से हैं, व्यावहारिक और बौद्धिक दोनों। जैसे व्यक्तिगत पत्र, कल्पना, जीवनी।
सार्वजनिक	• ग्रंथ जो बड़े समाज की गतिविधियों और चिंताओं से संबंधित हैं। जैसे मंच शैली ब्लॉग, समाचार वेबसाइटों और सार्वजनिक नोटिस।
शैक्षिक	• विशेष रूप से शिक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। उदाहरण: पाठ्यपुस्तकें
व्यावसायिक	• कुछ तात्कालिक कार्य की सिद्धि को शामिल करता है। उदाहरण: कार्यस्थल के दिशा-निर्देश, नौकरियों के वर्गीकृत विज्ञापन।

Lowest performing LOs in Samskrit in Class 6 – 8

Class – 6

LS605: पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु के संस्कृत शब्दों को शुद्ध रूप से लिखते हैं।
LS608: कथा यात्रा–वृत्तान्त, मेला तथा पर्यावरण से संबंधित पाठों के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
LS616: किसी नवीन विषय पर विचार व्यक्त कर पाते है।

Class – 7

LS713: नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते है और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते है।
LS716: कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाते है।
LS717: विभक्तियों/लकारों का उचित प्रयोग कर वाक्य बना पाते है।

Class – 8

LS811: विभिन्न विषयों उद्देश्यों में लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते है।
LS805: लकारों का व्यावहारिक प्रयोग भी कर सकते हैं। संधि, समास, कारक, लिंग, विभक्ति, वचन, पुरूषकाल के विषय में सामान्य जानकारी रखते है व प्रयोग करते है।
LS808: पाठ्यविषय में संवाद एवं नाट्यपाठ को हाव–भाव के साथ पढ़ सकते हैं। हिन्दी के छोटे व सरल वाक्यों को संस्कृत में एवं संस्कृत के सरल वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद कर सकते हैं।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा उपर्युक्त विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि हमें शिक्षण रणनीतियों में कुछ संशोधन कर नयी रणनीतियाँ बनानी होगी, जो उन क्षेत्रों को मजबूत करें जहाँ हमारा प्रदर्शन कमजोर है, साथ ही हमारे उच्च प्रदर्शन क्षेत्र (Higher Performance Area) को और भी बेहतर बनाने में हमारी मदद करें। प्रमुख उद्देश्य है कि विद्यालयीन शिक्षा की गुणवत्ता को विकसित करने के लिए अपेक्षित वातावरण सुलभ कराना जिससे विषय में हमारा प्रदर्शन बेहतर हो बच्चों विषयगत क्षमताएँ बढ़े यानि की लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति कक्षा में हो।

Day - 2

मूल्यांकन रचनात्मक → सावधिक → योगात्मक आकलन

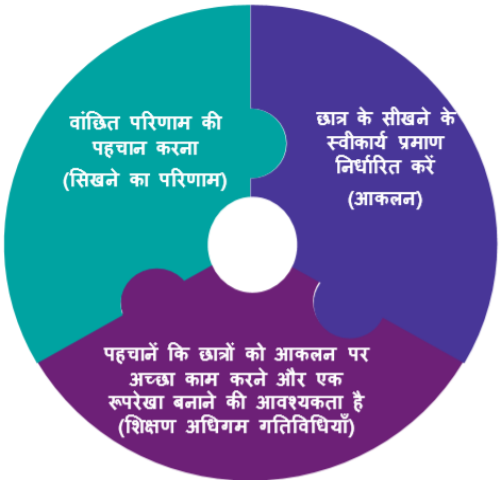

मूल्यांकन, सीखने के परिणामों और अध्यापन शिक्षण गतिविधियों के बीच संबंध :

आकलन

एन.सी.एफ. 2005 में विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण–शास्त्र पर प्रकाश डाला गया है, जिसका अनुसरण तब किया जा सकता है जब पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और कक्षा की गतिविधियों की योजना को विकसित की जा रही है उस समय भी विद्यार्थी पर ध्यान केंद्रित हो। संस्कृत के विद्वानों ने हजारों वर्ष पूर्व ही सीखने की प्रक्रिया को विद्यार्थी केन्द्रित करते हुए इस श्लोक के माध्यम से 4 भागों में बाँटा है –

आचार्यात्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
पादं स ब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च।।

उदाहरण के लिए, यदि हम माध्यमिक स्तर पर संस्कृत क्रियापद (धातुरूप) के बारे में एक विवरण शामिल करना चाहते हैं तो पाठ्यक्रम को उन संस्कृत क्रियापद (धातुरूप) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो बच्चे अपने दैनिक जीवन में जिन मूल क्रियाओं को प्रायः/सबसे अधिक व्यवहृत करते हैं और जिनके बारे में बात कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में उसी का विवरण प्रदान करना चाहिए। शिक्षक उन क्रियाओं की योजना बना सकते हैं जिन्हें बच्चे अपने घरों, पड़ोस, स्कूलों आदि में देखते हैं और उसे साझा कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में वे अपने अनुभवों को पाठ्यपुस्तक में दिए गए अनुभवों से जोड़ेंगे। **ऐसा करते समय, शिक्षक प्रत्येक बच्चे के सीखने के प्रतिफलों में प्रगति का निरीक्षण करेंगे।**

पाठ और लेखन के संदर्भ में :

आइए हम यहाँ आकलन की कुछ चर्चा कर लें :

प्रकार	कब	उद्देश्य
रचनात्मक	यह शिक्षण के दौरान निरंतर किया जाता है।	• सीखने में सुधार • शिक्षण प्रक्रिया में सुधार
सावधिक और योगात्मक	निश्चित अवधि, किसी इकाई, पाठ या निश्चित पाठ्यक्रम के पूर्ण शिक्षण उपरांत। स्कूल कैलेण्डर के अनुसार या सत्र के अंत में।	• ग्रेडिंग • कक्षोन्नति

FA और SA को क्रमबद्ध करना :

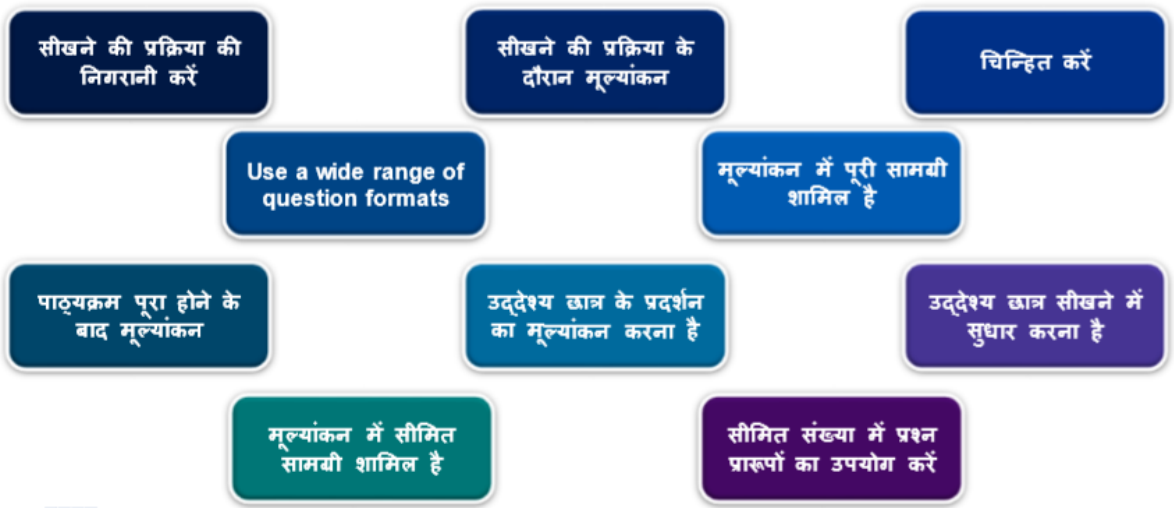

FA और SA को निर्दिष्ट करना :

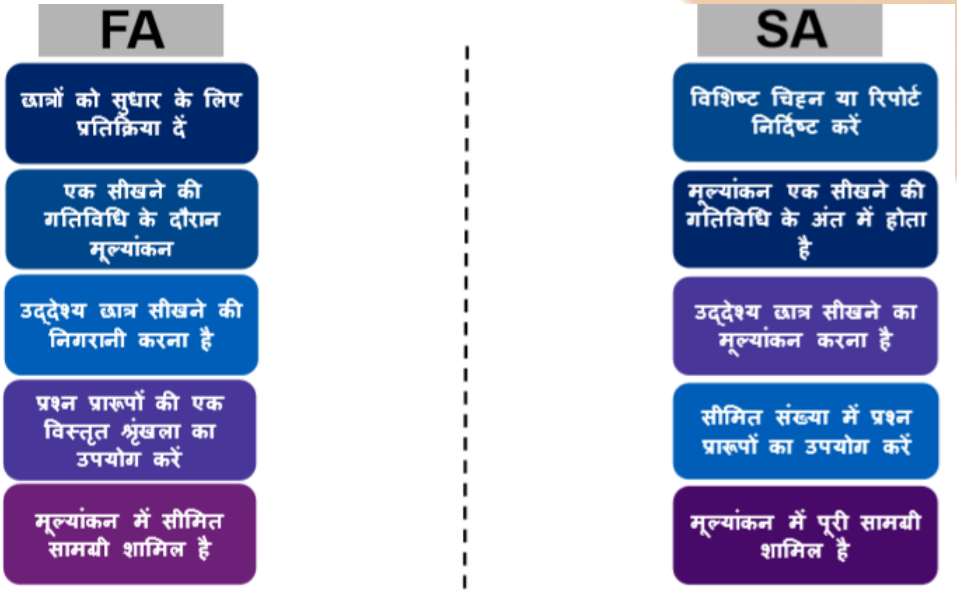

यहाँ योग्यता के 4 स्तर दिये जा रहे है, जिससे आप शिक्षण के साथ–साथ बच्चों की शैक्षिक प्रगति की पहचान कर सकें।

स्तर 1 से 4

प्रत्येक योग्यता पर छात्रों द्वारा सीखा और प्रदर्शित किए जाने वाले कौशल का सेट –

1

याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करके खोजें, लेबल करना, वर्णन करना

2

समझना, व्याख्या करना, चित्रण करना, संक्षेप करना, मेल करना।

3

लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना

4

मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना

Learning outcomes mapped to competency level (सीखने के प्रतिफल)

सीखने के प्रतिफलों को योग्यता के स्तर के साथ प्रतिचित्रित करना :

आमतौर पर हम पाठ्यपुस्तक को संपूर्ण पाठ्यक्रम मान कर पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों के आधार पर मूल्यांकन करते हैं पर पाठ्य सामग्री के संदर्भों की भिन्नताओं तथा पढ़ाने के विभिन्न सिद्धांतों को ध्यान में नहीं रखा जाता है। इसके लिए हमें चाहिए कि सीखने के प्रतिफल पर हमारी अवधारणा स्पष्ट हो एवं प्रतिफलों के आधार पर ही हम पाठ में आगे बढ़े।

सीखने के प्रतिफल :

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा सीखने के प्रतिफलों को विकसित किया है जो पठन सामग्री को रटकर याद करने पर आधारित मूल्यांकन से दूर जाने के लिए बनाए गए हैं। योग्यता (सीखने के प्रतिफल) आधारित मूल्यांकन पर जोर देकर, शिक्षकों और पूरी व्यवस्था को यह समझने में मदद की गई है कि बच्चे ज्ञान, कौशल, सामाजिक, व्यक्तिगत गुणों के विकास और दृष्टिकोणों में परिवर्तन के मामले में पूरे वर्ष के दौरान कक्षा में क्या हासिल करेंगे।

सीखने के प्रतिफल ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण ऐसे कथन है जिन्हें बच्चों को एक विशेष कक्षा या पाठ्यक्रम के अंत तक प्राप्त करने की आवश्यकता है और यह अधिगम संवर्धन की उन शिक्षणशास्त्रीय विधियों से समर्थित हैं जिनका क्रियान्वयन शिक्षकों द्वारा करने की आवश्यकता है। ये कथन प्रक्रिया आधारित हैं और समग्र विकास के पैमाने पर बच्चे की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक दोनों तरीकें से जाँच योग्य बिन्दु प्रदान करते हैं। सीखने के प्रतिफल सभी बच्चों, जिनमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (सी.डब्ल्यू.एस.एन) भी शामिल हैं, की शिक्षण शास्त्रीय प्रक्रियाओं और पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं से जुड़े हैं।

सीखने के प्रतिफल संबंधी जानकारी SCERT छत्तीसगढ़ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

प्रश्न पत्र प्रारूप

	FA1	SA1		FA2	SA2	
कक्षा 6 - 8	10	17 प्रश्न 40 अंक	1 प्रश्न अंक 05	10	17 प्रश्न 40 अंक	1 प्रश्न अंक 05
			3 प्रश्न अंक 10			3 प्रश्न अंक 10
			6 प्रश्न अंक 10			6 प्रश्न अंक 10
			6 प्रश्न अंक 15			6 प्रश्न अंक 15

भाग A पठन खंड – अंक 5

भाग B लेखन खंड – अंक 10

भाग C व्याकरण खंड – अंक 10

भाग D पाठ्य वस्तु खंड – अंक 15

		Competency level योग्यता विस्तार				Context प्रसंग/संदर्भ				Response Type अनुक्रिया प्रकार		Type of questions प्रश्नो के प्रकार			
	Lo Tagged	I	II	III	IV	Social	Personal	Vocational	Educational	Selected	Constructed	VSA 1 mark	SA 2 mark	LA 3 mark	VLA 5 mark
sec -A Reading					01 x 05 = 05						01				01
sec -B Writing			01 x 02 = 02	01 x 05 = 05 01 x 03 = 03							03		01	01	01
sec - c Grammar		04 x 01 = 04 01 x 02 = 02	02 x 02 = 04							04	03	04	03		
Sec - D Literature		01 x 01 = 01	01 x 02 = 02 03 x 03 = 09	01 x 03 = 03						01	05	01	01	04	
Total QS		06	07	03	01							05	05	05	02
Total; Marks		07	17	11	05							05	10	15	10
Question - Wise %		35	41	18	06										
Marks - Wise		17.5	42.5	27.5	12.5										

पाठ योजना – 2

दिनाङ्क ..... कक्षा – सप्तमी कालांश .....

विद्यालय ..... विषय– संस्कृतम्

पाठ का नाम – भोरमदेवः

पाठ्य–प्रकरण – छत्तीसगढ क्षेत्रस्य.....भोरमदेवः जातम्।

1. अधिगम प्रतिफल

LOS 707- पाठ्य पुस्तक में सम्मिलित गद्य, पद्य, कहानी, नाटक आदि पाठों में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों के अर्थ जानते हैं तथा शब्दार्थो का संग्रह भी करते हैं व आवश्यकतानुसार प्रयोग करते हैं।

2. शिक्षण सहायक समाग्री–

1.पाठ्य–पुस्तक, श्यामपट, चाक,

2. भोरमदेव मंदिर का चित्र।

3. पर्वत का चित्र।

4. छत्तीसगढ़ का मानचित्र (ऐतिहासिक या सामान्य)

5. जलाशय का चित्र।

6. शिवलिङ्ग का चित्र।

3. शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया

a. पूर्वज्ञान :– 1. छात्र मंदिरों एवं पर्वतों से परिचित हैं।

2. छात्र संस्कृत शब्दों का पढ़ना जानते हैं।

3. छात्र दीर्घ स्वर संधि को पहचानते हैं।

पाठ्य वस्तु से सम्बद्धता– (बच्चों के पूर्वज्ञान को पाठ्य–वस्तु में निहित ज्ञान से जोड़ने हेतु एवं बच्चों को नये ज्ञान की प्राप्ति हेतु उत्साहित करने के लिए प्रस्तावना के प्रश्न करों)

क्रमांक	शिक्षक के प्रश्न	छात्र द्वारा संभावित उत्तर
1	क्या आपने मंदिर देखा है ?	हाँ।
2	आपने कौन–कौन से मंदिरों को देखा हैं ?	शीतला मंदिर, हनुमान मंदिर, शिव मंदिर इत्यादि
3.	किसी मंदिर को ऐतिहासिक मंदिर क्यों कहा जाता है ?	निरुत्तर।

उद्देश्य कथनः– बच्चों, ऐसे मंदिर जो बहुत पुराने समय में किसी विशेष उद्देश्य या विशेष व्यक्ति द्वारा बनाया गया होता है वे ऐतिहासिक मन्दिर के श्रेणी में आते हैं। आज हम ऐतिहासिक मंदिर ''भोरमदेव'' के विषय में अध्ययन करेंगे।

b. शिक्षण–अधिगम प्रविधियाँ– आदर्श एवं अनुकरण पठन विधि, अनुवाद विधि, आगमन–निगमन विधि, व्याख्यान विधि।

c. बैठक व्यवस्था – कक्षा कक्ष में बच्चे क्रमबद्ध रूप से बैठेंगे, जिसमें दिव्याङ्ग बच्चों को प्रथम पंक्ति में बैठाया जाएगा। आवश्यकतानुसार समूह विभाजन किया जाएगा।

d. स्थान – कक्षाकक्ष के भीतर

सामान्य उद्देश्यः–

1. संस्कृत भाषा का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
2. सरल संस्कृत वाक्यों में विचारों की अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
3. व्याकरणिक तत्त्वों का यथोचित प्रयोग कर सकेंगे।
4. सुनकर संस्कृत शब्दों/वाक्यों को शुद्धतापूर्वक लिख सकेंगे।
5. संस्कृत रचनाओं/साहित्यिक विधाओं को हाव–भाव, लय एवं प्रवाह के साथ वाचन कर सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्यः–

1. छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक स्थलों से परिचित होंगे।
2. छत्तीसगढ़ की वास्तुकला एवं स्थापत्य कला का सौन्दर्य बोध होगा।
3. ऐतिहासिक धरोहरों को सुरक्षित एवं सुसज्जित करने की प्रेरणा मिलेगी।

विषय–वस्तु

क्र.	शिक्षण बिन्दु/कौशल	शिक्षण विधि/गतिविधि (शिक्षक क्रिया)	छात्र क्रिया	श्यामपट कार्य
1	श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास करना	1. सुनो और बोलो विधि– शिक्षक द्वारा पाठ्य वस्तु में विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए उचित लय–ताल एवं प्रवाह के साथ शुद्धतापूर्वक वाचन करना	शिक्षक के अनुसार छात्र अनुकरण वाचन करेंगे।	
		2. शिक्षक द्वारा छात्रों को अनुकरण वाचन करने का निर्देश देना।	बच्चे सस्वर एवं मौन पठन करेंगें।	शिक्षक कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखेंगे।

2	कठिन शब्दों का अर्थबोध कराना	काठिन्य निवारण विधि– शिक्षक द्वारा छात्रों से कठिन शब्दों को आमंत्रित करना एवं उनका अर्थ बताकर श्यामपट पर लिखना	छात्र कठिन शब्दों का अर्थ पूछेंगे अर्थ समझेंगे एवं अभ्यास पुस्तिका में उसे लिखेंगे	अद्यापि = आज भी स्मारयन्ति = याद दिलाते हैं। प्रतिष्ठितः = स्थित है। अभिधीयते = कहा जाता हैं।
3	पाठ्यांश की समझ का विकास करना	व्याख्यान विधि– शिक्षक द्वारा पाठ्यांश का हिन्दी में अनुवाद कर पाठ के केन्द्रीय भाव को स्पष्ट करेगा।	छात्र पाठ्यांश में निहित भावों को समझेंगे।	
4	भाषा–तत्व (व्याकरणिक ज्ञान)	आगमन–निगमन विधि उदा. अद्यापि शिक्षक– इस शब्द में कौन–कौन से शब्द है? शिक्षक– अद्य के अन्तिम वर्ण में कौन सा स्वर है ? शिक्षक– अपि शब्द के प्रांरभ में कौन सा वर्ण है ? शिक्षक– अद्यापि में 'आ' का आगमन कैसे हुआ ? शिक्षक– दो समान स्वर आपस में जहाँ मिलते हैं वहाँ दीर्घ स्वर संधि होती है जैसे– अ+अ = आ (गतिविधि) – कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं को चार समूह में बॉटेंगे, सभी समूह के छात्र अपने–अपने समूह में गोला बनाकर या आमने–सामने बैठेंगे, प्रस्तुत पाठ में प्रयुक्त दीर्घ सन्धि के अन्य उदाहरणों को चर्चा करते हुए लिखेंगे, तथा सबके सामने प्रस्तुत करेंगे। शिक्षक ध्यान से देखेंगे तथा कोई समस्या हो तो उसका निवारण करेंगे।	छात्र– इसमें अद्य और अपि ये दो शब्द हैं। छात्र– अद्य के अन्तिम वर्ण में 'अ' स्वर है। छात्र– 'अ' है। छात्र– निरुत्तर। छात्र– दीर्घस्वर संधि को समझते हुए उसकी परिभाषा अपनी अभ्यास पुस्तिका मे लिखेंगे। छात्र गतिविधि करेंगे	अद्य + अपि अ + अ = आ अद्यापि जिलान्तर्गतम् जिला+अन्तर्गतम् आ+अ = आ एवमेव एवम्+एव व्यञ्जन संधि उपसर्ग– प्रतिष्ठितः = प्रति+स्था+क्त अभिधीयते अभि+धी+त अव्ययम् अद्यापि = आज भी एवमेव = ऐसा ही इति = ऐसा न = नहीं अपितु = बल्कि वस्तुतः = वास्तव में

4. आकलन :

बोधप्रश्न 1. भोरमदेवमंदिरं कस्यां जिलायां स्थितम्?

(भोरमदेव का मंदिर किस जिले में स्थित है ?)

2. ''छत्तीसगढस्य खजुराहो'' इति अभिधीयते ?

(छत्तीसगढ का खजुराहो के नाम से जाना जाता है ?)

3. भोरमदेवः केषाम् आराध्यदेवः मन्यते ?

(भोरमदेव को किनका आराध्य देव माना जाता है ?)

4. 'ऐतिहासिकम्' इति किम् ?

(ऐतिहासिक किसे कहते हैं ?)

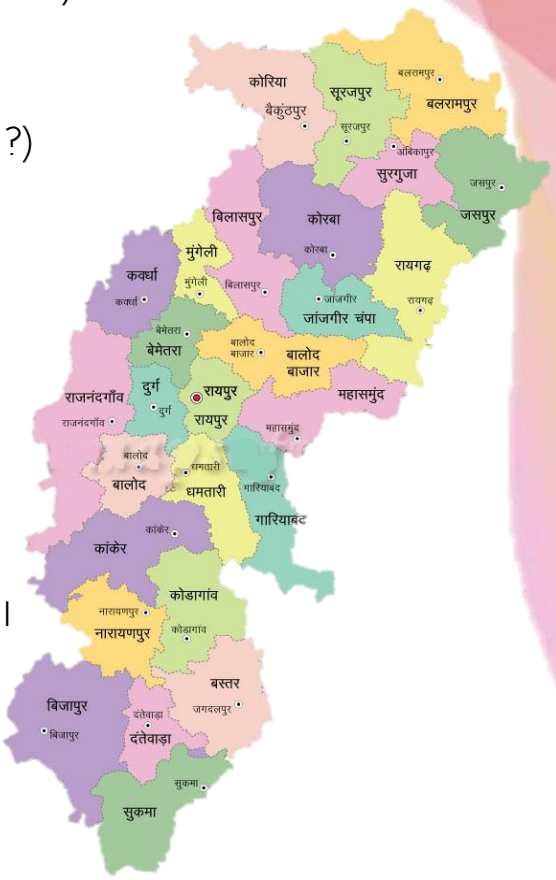

अभ्यास प्रश्नः–

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. छत्तीसगढे..... प्राचीन मन्दिराणि सन्ति।
2. छत्तीसगढस्य खजुराहो ..... अभिधीयते।
3. भोरमदेवः ..... जिलान्तर्गते स्थितः।
4. भोरमदेवः ..... आराध्यदेवः अस्ति।

5. सार–कथन : शिक्षक द्वारा पाठ्य के विषय–वस्तु को सारांश में पुनः प्रस्तुत करना

6. प्रदत्त कार्य : छत्तीसगढ़ के दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थलों की सूची बनाइये।

7. पाठ–योजना के प्रभाव पर शिक्षक द्वारा समीक्षा : शिक्षक शिक्षणोपरान्त शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं, कठिनाइयों एवं प्रभाव का वर्णन करें।

Day - 3

Transactional Pedagogy and use of Manipulatives

कक्षा में भाषाई कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना व्याकरण, नवीन शब्दावली विकसित करने हेतु कक्षा में विभिन्न शिक्षण विधियां / गतिविधियों की रचना करनी होगी।

प्रयास हो कि ये गतिविधियां: शिक्षण विधियां बच्चों की आयु और उनके परिवेश के अनुसार हों जैसे कहानी कविता हाव–भाव के साथ सुनाना।

बच्चों को बोलने के विविध अवसर देना जैसे कहानी, कविता, नारे आदि सुनाना भाषण देना अपने अनुभव बताना।

उन्हें आयु अनुरूप किताबें एवं अन्य पाठ्य सामग्री पढ़ने को देना।

बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देना। ये अवसर कहानी, भाषण, कविता, पत्र, निबंध, संस्मरण आदि हो सकते हैं।

वर्तमान में बच्चों में भाषायी कौशल विकसित करने हेतु 5 E इंस्ट्रक्शनल मॉडल का उपयोग किया जा रहा है। इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

5E इंस्ट्रक्शनल मॉडल

यह मॉडल एक पाँच–चरण शिक्षण अनुक्रम का वर्णन करता है जिसका उपयोग विषय की इकाइयों और पाठों के शिक्षण के लिए किया जा सकता है।

इस मॉडल से छात्रों को अनुभवों और नए विचारों से अपनी समझ बनाने में मदद मिलती हैं। यह समस्या–समाधान आधारित शिक्षण योजना है।

Engage: एंगेज स्टेज का उद्देश्य छात्र की रुचि को समझकर उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षण योजना में शामिल करना है। इसके पहले विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान का आकलन करना जरूरी है।

EXPLORE: EXPLORE स्टेज के अंतर्गत छात्रों के समक्ष विषय से संबंधित परिस्थितियाँ/चुनौतियाँ दी जाती हैं। जिससे उन्हें विषय पर अपनी समझ बनाने का मौका मिलता है।

EXPLAIN: EXPLAIN चरण का उद्देश्य छात्रों को अवसर प्रदान करता है कि उन्होंने अब तक जो सीखा है उस पर अपनी समझ विकसित कर सकें।

EXTEND: EXTEND चरण का उद्देश्य छात्रों को अपने सीखे गए ज्ञान का उपयोग नवीन परिस्थितियों में कर सकें ।

EVALUATE: EVALUATE चरण का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए यह निर्धारित करना है कि बच्चों ने कितना कुछ सीखा कहां उन्हें और मदद की आवश्यकता है। यह चरण remediation से संबंधित है।

पाठ योजना – 3

दिनाङ्क ..... कक्षा – अष्टमी कालांश.....

विद्यालय..... विषय– संस्कृतम्

पाठ का नाम – सुभाषितानि

पाठ्य–प्रकरण – रूपयौवनसम्पन्ना.....न नमन्ति कदाचन ।

1. अधिगम प्रतिफल :

LOS 807- पाठ्य पुस्तक में सम्मिलित गद्य, पद्य, कहानी, नाटक आदि पाठों में प्रयुक्त कठिन संस्कृत शब्दों के अर्थ जानते हैं तथा शब्दार्थों का संग्रह भी करते हैं व आवश्यकतानुसार प्रयोग करते हैं।

2. शिक्षण सहायक समाग्री :

1. पाठ्य–पुस्तक, श्यामपट, चाक,
2. शुष्क वृक्ष एवं फलदार वृक्ष का चित्र।
3. काटे जाने वाले शाखा पर बैठे मूर्ख व्यक्ति का चित्र।
4. पुष्पयुक्त पलाश वृक्ष का चित्र।

3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया :

a. पूर्वज्ञान :–
1. छात्र संस्कृत श्लोकों का सस्वर वाचन करना जानते हैं।
2. छात्र परिवार, रूप–सौंदर्य, वृक्ष, पलाश के पुष्प आदि से परिचित हैं।
3. छात्र विनम्रता की अवधारणा से परिचित है।

पाठ्य वस्तु से सम्बद्धता–

क्रमांक	शिक्षक प्रश्न	छात्र द्वारा संभावित उत्तर
1.	रूपवान किसे कहते हैं ?	जो व्यक्ति सुन्दर स्वरूप वाला होता है उसे रूपवान कहते हैं।
2.	पलाश का फूल किस रंग का होता है ?	लाल रंग का होता है।
3.	गुणी व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है ?	निरुत्तर।

उद्देश्य कथनः– गुणी व्यक्ति उदार होता है सदा ही सबका हित करता है और उसके वचन लाभकारी व मीठे होते हैं। इसी तरह अच्छी और हितकारी बातों से समाहित संस्कृत–पदों को सुभाषित कहते हैं। आज हम सुभाषितानि पाठ के श्लोक क्र 06 व 07 का अध्ययन करेंगे।

b. शिक्षण–अधिगम प्रविधियाँ– आदर्श एवं अनुकरण पठन विधि, अनुवाद विधि, आगमन–निगमन विधि, व्याख्यान विधि

c. बैठक व्यवस्थाः– बच्चे क्रमबद्ध बैठेंगे, जिनमें दिव्याङ्ग बच्चों को प्रथम पंक्ति में बैठाया जाएगा। आवश्यकतानुसार समूह विभाजन किया जाएगा।

d. स्थान – कक्षाकक्ष के भीतर

सामान्य उद्देश्यः–

1. संस्कृत श्लोकों का लय–ताल के साथ सस्वर वाचन कर सकेगा।
2. संस्कृत पढ़ने के प्रति रूचि जागृत होगी।
3. व्यावहारिक जीवन में नीति वचनों को अपना सकेगा।

विशिष्ट उद्देश्यः–

1. विद्या के महत्त्व को समझ सकेगा।
2. अपने जीवन में परोपकार को अपनायेगा।
3. हमेशा विनम्र भाव से रहने की आदत विकसित होगी।

विषय–वस्तु

क्रमांक	शिक्षक प्रश्न	छात्र द्वारा संभावित उत्तर
1.	रूपवान किसे कहते हैं ?	जो व्यक्ति सुन्दर स्वरूप वाला होता है उसे रूपवान कहते हैं।
2.	पलाश का फूल किस रंग का होता है ?	लाल रंग का होता है।
3.	गुणी व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है ?	निरुत्तर।

4. आकलन :

बोधप्रश्न : 1. निर्गन्धाः किंशुकपुष्पाणि इव के न शोभन्ते?

(सुगन्धहीन टेसू (पलाश)की फूल की तरह कौन शोभित नहीं होते हैं ?)

2. कीदृशानि वृक्षाणि नमन्ति?

(किस प्रकार के वृक्ष झुक जाते हैं ?)

3. मूर्खाः जनाः किमर्थं न नमन्ति?

(मूर्ख व्यक्ति क्यों नहीं झुकते हैं ?)

4. मूर्खजनस्य तुलना केन सह कृता?

(मूर्ख व्यक्ति की तुलना किससे की गई हैं ?)

अभ्यास–प्रश्न :

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. विद्याहीन व्यक्ति शोभित नहीं होते हैं।
2. गुणी लोग झुक जाते हैं।
3. सूखे वृक्ष कभी नहीं झुकते।
4. वह रूपयौवन से सम्पन्न है।
5. पलाश के फूल लाल होते हैं।

5. **सार–कथन :** शिक्षक द्वारा पाठ्य के विषय–वस्तु को सारांश में पुनः प्रस्तुत करना

6. **प्रदत्त कार्य :** कोई पाँच सुभाषित श्लोकों का संग्रह कीजिए जो इस पाठ्य–पुस्तक में सम्मिलित न हो।

7. **पाठ–योजना के प्रभाव पर शिक्षक द्वारा समीक्षा :** शिक्षक शिक्षण के उपरान्त शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं, कठिनाइयों एवं प्रभाव का वर्णन करें।

Day - 4

उपचारात्मक शिक्षण (Remediation)

विद्यार्थी की व्यक्तिगत शैक्षिक आवश्यकतानुसार सीखने–सिखाने की नई (संशोधित) रणनीति बनाकर पाठ योजना में सुधार करना।

(उपचारात्मक शिक्षण में शामिल करने के लिए पुनरीक्षित पाठयोजना को शिक्षण में दोबारा शामिल करना और छात्र से व्यक्तिगत रूप से मिलने की रणनीतियाँ)

उपचारात्मक शिक्षण प्रक्रिया (Remediation Process)

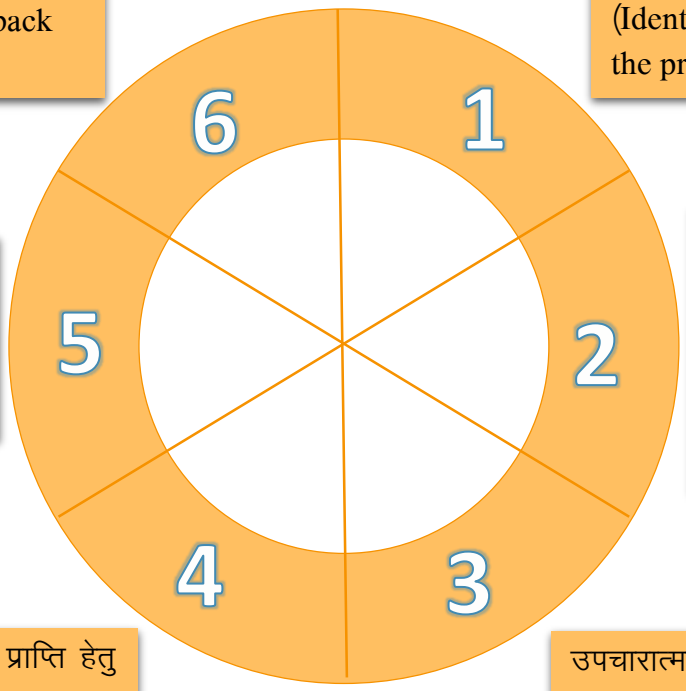

1. विद्यार्थी को सीखने में आ रही कठिनाई की पहचान करना (Identifying the students with the problem)
2. अवलोकन व आकलनों से प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण कर Learning gaps पर समझ बनाना। (Analysing the data to understand learning gaps)
3. उपचारात्मक लक्ष्यों का विकास करना (Developing remedial goals)
4. उपचारात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु योजना बनाना (Identifying strategies)
5. उपचारात्मक योजना का क्रियान्वयन (Implementation of remediation plan)
6. उपचारात्मक कार्य का आकलन, क्या Learning gat खत्म किया गया (Remediation feedback for program evaluation)

उपचारात्मक योजना (Remediation Plan)

विद्यार्थी .....

शिक्षक .....

कोर्स ..... तारीख .....

विषय / प्रोजेक्ट .....

समस्या	समस्या का हल	आवश्यक संसाधन

Day - 5

पाठ योजना

शिक्षक किसी पाठ या इकाई को पढ़ाने के लिए उसे छोटे–छोटे अंशों या उप इकाईयों में बांट लेता है। एक उप इकाई की विषय–वस्तु को एक कालखण्ड में पढ़ाया जाता है। इस कालखण्ड में निर्धारित विषय–वस्तु को पढ़ाने के लिए एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाती है, जिसे पाठ योजना कहा जाता है। शिक्षक के लिए पाठ योजना का निर्माण उतना ही आवश्यक है। जितना एक इंजीनियर के लिए मकान बनाने के लिए मानचित्र या ब्लूप्रिंट का होना।

- पाठ योजना कक्षा शिक्षक को दिशा–निर्देश प्रदान करती है।
- यह शिक्षक के लिए पथ–प्रदर्शन एवं मित्र का कार्य करती है।
- पाठ योजना शिक्षण की विविध क्रियाओं और सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी देती है।
- पाठ योजना के निर्माण में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए जाने के अवसर विद्यमान होते है।

एक अच्छी पाठ योजना बनाने के लिए शिक्षक को अपने विषय की गहन जानकारी के साथ अन्य विषयों का सामान्य ज्ञान होना चाहिए एवं कक्षा स्तर और विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जानकारी भी शिक्षक को होनी चाहिए।

पाठ योजना

कक्षा	.....	दिनांक	.....
विषय	.....	कालांश	.....
शीर्षक	.....		
उपशीर्षक / प्रकरण	.....		

1. अधिगम प्रतिफल :

स्तर 1 .....

स्तर 2 .....

स्तर 3 .....

स्तर 4 .....

2. शिक्षण सहायक सामग्री

3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

a. गतिविधि

पूर्व ज्ञान

विषय से संबद्धता

b. शिक्षण अधिगम प्रविधियाँ

c. बैठने की व्यवस्थाः व्यक्तिगत / जोड़ी / साझा / समूह

d. कक्षा / बाहर / प्रयोगशाला / कोई अन्य (निर्दिष्ट)

4. आकलन –

5. सारकथन / पुनर्कथन -

6. प्रदत्त कार्य –

7. पाठ योजना के प्रभाव का शिक्षक द्वारा समीक्षा–

सुझावात्मक गतिविधियाँ

गतिविधियाँ यहाँ प्रस्तुत करते समय यह ध्यान रखा गया है कि वे **Lowest performing LOs** पर आधारित हों। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि एक पाठ से जुड़े एक से अधिक **LOs** हो सकते हैं, वहीं एक **LO** एक से अधिक पाठों से संबंधित हो सकता है। प्रत्येक अध्यापक अपने आप में अद्‌वितीय होता है। उसके पास हर बच्चे के गुणों के विकास करने के अपने विशिष्ट तरीके होते हैं। नीचे इसी ओर किया गया एक प्रयास है जो कि पूर्णतः सुझावात्मक है जिससे कि हम अपने कमजोर क्षेत्रों में फोकस होकर बेहतर कार्य कर सकते हैं।

कक्षा 6 से 8 तक के पाठों के उददेश्यों को समझते हुये गतिविधियों के साथ सीखने-सिखाने की योजना बनाना तथा आकलन की प्रक्रिया निर्धारित करना। इसके लिए कुछ गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं –

LS605: पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु के संस्कृत शब्दों को शुद्धरूप से लिखते हैं।

गतिविधि – 1

पाठ 12 ''अस्माकम् आहारः'' में प्रयुक्त अन्न, शाक, फल, पेय पदार्थों को देखकर उनसे निर्मित होने वाले अन्य खाद्यपदार्थों के नाम मातृभाषा में लिखेंगे तथा उन नामों को संस्कृत में क्या कहते हैं? अपने शिक्षक से चर्चा करेंगे।

गतिविधि – अन्न – चणकः, तण्डुलः, गोधूमः, द्विदलं, यवः, आढकी, मुद्‌गः, माषः इत्यादि।
शाकफलानि – कूष्माण्डकः, कर्कटी, अलाबूः, मूलिका, आम्रम्, इक्षुः, कदलीफलं, कारवेल्लम् इत्यादि।
पेयपदार्थ – नवनीतं, दुग्धं, घृतं, तक्रं, दधि इत्यादि।
उपर्युक्त पदार्थों में से कुछ पदार्थों को शिक्षक प्रदर्शित करेंगे और छात्र उन खाद्य पदार्थों से बनने वाले अन्य व्यञ्जनों के नाम संग्रह कर लिखेंगे तथा बोलकर सभी को बताएँगे–

जैसे– चणकः – चना
चने से बेसन बनेगा,
बेसन से भजिया बनेगा,
बेसन से मिठाईयाँ बनेंगी।
शिक्षक अब बेसन → चणकपिष्टः, भजिया → भूज्जिका, एवं मिठाईयों के संस्कृत नाम बताएँगे → मिष्ठान्नम्

सीखने का प्रतिफल– शिक्षक द्वारा बताये गये नामों को छात्र अपनी अभ्यास–पुस्तिका में लिखेंगे। इसी आधार पर अन्य खाद्‌यान्नों, तथा पाठ्यवस्तु के संस्कृत शब्दों को शुद्ध रूप से लिखेंगे।

गतिविधि – 2

शिक्षक सर्वप्रथम कक्षा को समूहों में विभाजित करेंगे। तत्पश्चात् आधुनिक युग के आविष्कारों के बारे में बताते हुए प्रत्येक समूह को अलग–अलग यन्त्रों का चित्र प्रदान करेंगे और निर्देशित करेंगे कि प्रत्येक समूह अपने–अपने यंत्र के विषय में संक्षिप्त जानकारी अन्य समूहों के मध्य प्रस्तुत करेंगे। मान लीजिए प्रथम समूह को फ्रीजयन्त्र' का चित्र मिला।

प्रथम समूह– 'फ्रीजयन्त्र' से संबंधित शब्दों को पाठ से ढूंढकर, चार्ट पेपर में लिखकर, दीवार पर लटका देगा। उसी प्रकार अन्य समूह भी अपने अपने विषय जैसे कम्प्यूटर, वायुयान, दूरदर्शन, रेडियो और मोबाईल से संबंधित नवीन शब्दों को खोजकर चार्ट पेपर में लिखकर दीवार पर टांग देंगे। अब शिक्षक टंगे हुए प्रत्येक चार्ट से तीन–तीन शब्दों को संस्कृत में श्यामपट पर लिखेंगे और समूहों को निर्देशित करेंगे कि प्रदत्त तीन–तीन शब्दों का अर्थ मातृभाषा में अपनी कापी में लिखेंगे और जिस समूह का ज्यादा उत्तर सही होगा, वह विजयी घोषित होगा।

सीखने का प्रतिफल– इस गतिविधि से निश्चित रूप से छात्रों में संस्कृत के नये–नये शब्दों के अर्थ संग्रह की प्रवृत्ति में वृद्वि होगी, साथ ही शब्द–भण्डार भी बढ़ेगा, एवं संस्कृत के शब्दों को शुद्ध रूप से लिखेंगे।

पंखा (व्यजनम्)	लैपटाप (अंकसंगणकम्)	एसी वातायनम्
समीकरः	मिश्रकः	क्षालयनयन्त्रम्

गतिविधि – 3

गतिविधि– शिक्षक सर्वप्रथम दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं को एक टेबल में स्थापित करेगा। स्थापित वस्तुओं का संस्कृतनाम लिङ्गों के आधार पर परिचित कराएगा। जैसे– पुँल्लिङ्ग में एषः मूषकः (चूहा), स्त्रीलिङ्ग में– एषा रोटिका तथा नपुंसकलिङ्ग में एतत्– पुष्पम्। प्रत्येक वस्तुओं को बार–बार लिङ्गों के अनुसार अभ्यास कराकर आपस में वस्तुओं को मिला देंगे। टेबल में पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग का स्फोर पत्रक लगायेंगे। प्रत्येक बच्चों को क्रमशः बुलायेंगे तथा एक वस्तु का संस्कृत नाम जानेंगे। वह वस्तु जिस लिङ्ग में आयेगा, उसको लिङ्गानुसार टेबल में रखने के लिए कहेंगे। यह क्रिया अंतिम छात्र तक चलता रहेगा।

सीखने का प्रतिफल– लिङ्गाधारित गतिविधि के द्वारा छात्र तीनों लिङ्गों से संबंधित वस्तुओं की पहचान करने में समर्थ हो सकेगा।

LS616: किसी नवीन विषय पर विचार व्यक्त कर पाते है

गतिविधि – 1

शिक्षक चित्र–शैली के माध्यम से छात्रों से बातचीत।

गतिविधि–

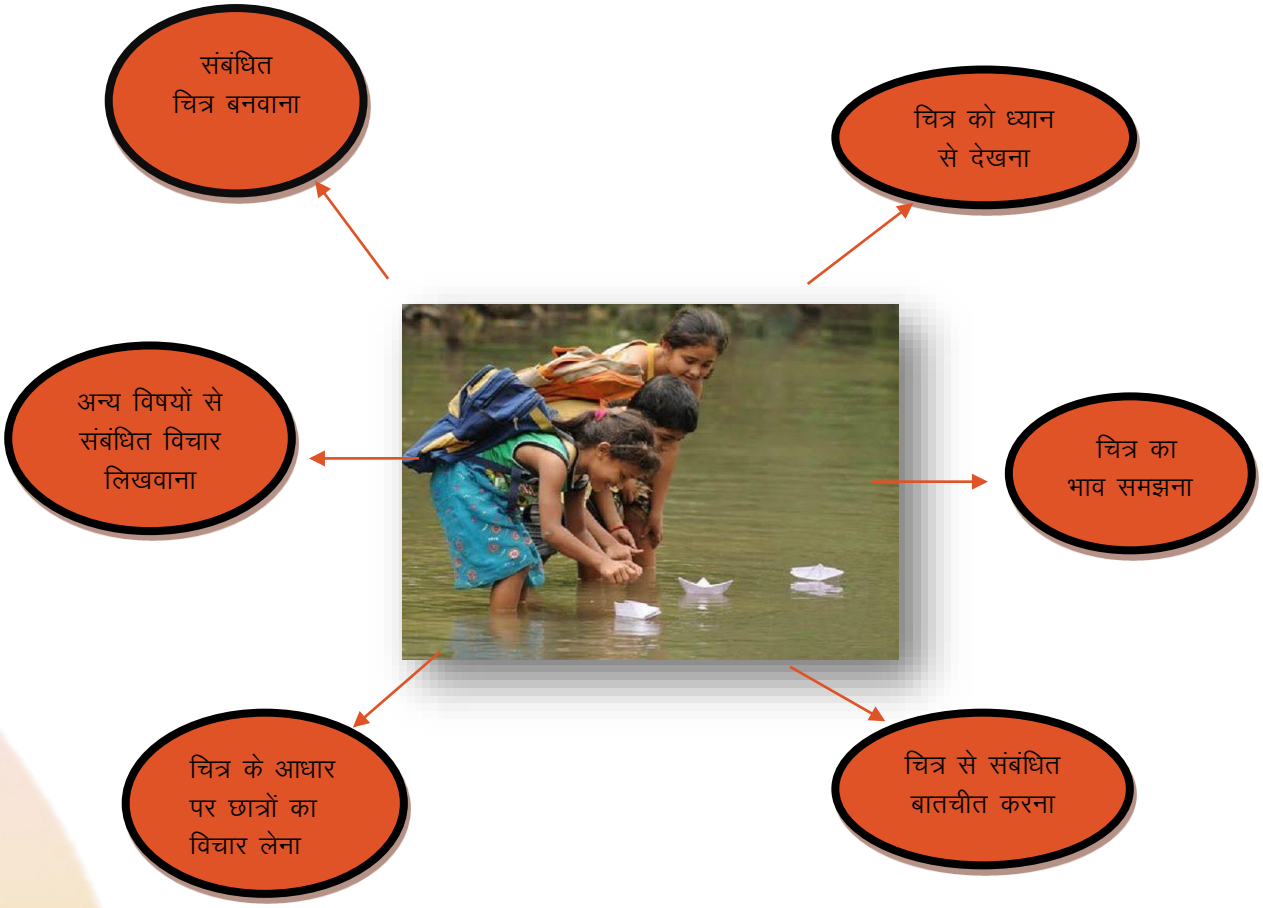

अब शिक्षक सबसे पहले कक्षा में श्यामपट पर चित्र बनायेंगे, चित्र बनाकर शिक्षक छात्रों से चित्र के संबंध में विचार आमंत्रित करेंगे। तत्पश्चात् अन्य विषयों से संबंधित विचार आमंत्रित कर श्यामपट पर लिखवायेंगे। इस प्रकार की गतिविधि करने से नये–नये शब्दों का सृजन कर सकने में छात्र समर्थ हो सकेंगे।

सीखने का प्रतिफल– छात्र किसी नवीन विषय पर विचार व्यक्त करते हुए संस्कृत के नये–नये शब्दों के संग्रह की प्रवृत्ति का विकास होगा।

गतिविधि – 2

गतिविधियाँ – अपने दैनिक जीवन में व्यावहारिक शब्दों तथा सामग्रियों के संस्कृत नामों को जानते हैं। कक्षा षष्ठी के छात्र–छात्राएँ अपने घर में, पाठशाला में, पड़ोस में, विद्यालय में, कक्षा में व्यवहारिक शब्दों वस्तुओं का अनेकानेक प्रकार से प्रयोग करते है। प्रयुक्त शब्दों की सूची बनाने को कहेंगे। छात्रगण व्यवहारिक सामग्रियों का संस्कृत–नाम वार्तालाप, चर्चा, खेल–खेल में कैसे भली–भाँति सीखते हैं, इसको गतिविधियों के माध्यम से सीखेंगे।

पाठशाला की वस्तुओं, घर में औजारों, उपकरणों, परिधानों–आभूषणों, रिश्ते–नातों व पुष्पों–वृक्षों, पशु–पक्षियों के नामाधारित चार्टों व चित्रों को दीवार में स्थापित करेंगे।

दीवार में स्थापित चार्ट में से विभिन्न वस्तुओं के नाम हिन्दी में लिखकर पर्ची बनायेंगे। प्रत्येक पर्ची में कोई तीन–तीन वस्तुओं के नाम होंगे। जिन्हें किसी पारदर्शी डिब्बे में रखेंगे। छात्रों को 10–10 के समूह में बांटेंगे तथा प्रत्येक समूह को बुलाकर क्रमशः एक–एक पर्ची उठाकर, एक साथ खोलेंगे और तीन मिनट के निर्धारित समय में पर्ची में लिखे वस्तुओं के नामों को चार्ट में देखकर उनके संस्कृत नाम खोजकर लायेंगे। जो छात्र निर्धारित समय– सीमा में सही–सही प्रदर्शित करेगा, वह विजयी घोषित होगा। यह गतिविधि समूहों में भी आयोजित किया जा सकेगा।

सीखने का प्रतिफल– इस प्रकार की गतिविधि से दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले सामग्रियों के नाम संस्कृत में सीख सकेंगे तथा वस्तु की उपयोगिता पर अपना विचार व्यक्त कर सकेंगे।

आभरणानि तथा वस्त्राणि

मृगाः

गतिविधि – 3

गतिविधि : सर्वप्रथम शिक्षक स्वयं से सङ्कलित वस्तुओं को कार्टून अथवा पात्र में एकत्र करेगा तथा वस्तु आधारित चार्ट को प्रकोष्ठ के चारों तरफ स्थापित करेगा। स्वतन्त्र तरीके से क्रमशः बच्चों को बुलाकर एक–एक वस्तु उठाने के लिए कहेंगे। प्राप्त वस्तु को संस्कृत में क्या कहते हैं? इसका पता दीवारों में स्थापित चार्ट की सहायता से खोजने के लिए कहेंगे। सभी वस्तु का संस्कृत नाम खोजेंगे और शिक्षक को दिखायेंगे।

सीखने का प्रतिफल– छात्र इस प्रकार की गतिविधि से दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं का संकलन कर संस्कृत नामों से परिचित हो सकेंगे एवं अपना विचार व्यक्त करने में समर्थ होंगे।

Ls 608 - कथा, यात्रा–वृतान्त, मेला तथा पर्यावरण से संबंधित पाठों के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे

गतिविधि – 1

शिक्षक हाथ में मेला से संबंधित कुछ चित्र लेकर कक्षा–कक्ष में प्रवेश करेंगे। तथा चित्रों को दिखाकर बच्चों से जानने का प्रयास करेंगे कि ये चित्र कहाँ का है। जब बच्चों से सही जवाब आ जाएं तब मेला के विषय में पूछे, बच्चों के बतानें के बाद शिक्षक बच्चों के द्वारा दिए गए उत्तरों का व्यवस्थित करके पुनः छात्रों को विस्तार पूर्वक मेला के विषय में बनाएँगें। तथा गांव के आस–पास में होनें वालें मेलों पर चर्चा करेंगे। अब छात्रों को

समूह में बाँट कर अपने आस–पास के मेला के विषय में मातृभाषा में लिखने कहें, फिर सभी समूह आकर कक्षा में प्रदर्शन करें। शिक्षक ध्यान से सुनकर सही–कार्य करनें वालें समूह को विजेता घोषित करते हुए अन्य समूहों को भी प्रोत्साहित करेंगे।

सीखने का प्रतिफल – छात्र–छात्राएँ मेले से परिचित तो होते ही है इस गतिविधि के बाद वे मेलों से संबंधित सारांश को व्यवस्थित रूप से अपनें शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।

गतिविधि – 3

शिक्षक छात्र–छात्राओं को समूह में बाँटकर प्रत्येक समूह को अलग–अलग चित्र देंगे, जिसमें यात्रा से संबंधित, पर्यावरण जैसे– नदी, झरना, पर्वत, जंगल, पेड़, पौधे आदि रहेंगे। अब समूह इन चित्रों को देखकर इनसे संबंधित वाक्य मातृभाषा में बोलेंगे, तथा शिक्षक श्यामपट पर लिखेंगे। भिन्न–भिन्न विषयों पर लिखा श्यामपट के वाक्य सभी छात्र पढ़ेंगे तथा समूह में चचा करेंगे। शिक्षक श्यामपट साफ कर देंवें। पुनः क्रमशः प्रत्येक समूह को उपर्युक्त सभी विषयों में अपने शब्दों में लिखने दिया जाएगा। समूह द्वारा लिखें वाक्यों को अपने शब्दों में प्रस्तुत करेंगे।

सीखने का प्रतिफल – छात्र विभिन्न विषय जैसे– कथा, मेला, यात्रा, वृतान्त तथा पर्यावरण संबंधित पाठों के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगें।

LS 713 (क) - विभिन्न विषयों उद्देश्यों में लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का

गतिविधि – 1

पाठ्य पुस्तक में प्रयुक्त व्याकरणिक तत्त्वों में अव्यय का महत्वपूर्ण स्थान है। अव्ययों का एक चार्ट निर्माण करेंगे।

जिसमें अव्यय की परिभाषा, संस्कृत तथा हिन्दीभाषा में उदाहरणों सहित लिखी हुई हो।

गतिविधि–

1. पाठ्य पुस्तक के किसी एक पृष्ठ को खोलकर छात्रों को अव्यय ढूंढकर अर्थ सहित लिखने के लिए कहेंगे।
2. छात्रों को चार–चार के समूहों में बांटकर भी यही गतिविधि करायी जा सकती है।
3. अव्ययों को अभिनयपूर्वक शिक्षक स्वयं करते हुए एकल व सामूहिक अभिनय का अभ्यास करायेंगे। यथा– 'अत्र' ''यहाँ'' को हाथों की सहायता से अभिनय कर बतायेंगे। उसी प्रकार तत्र, कुत्र, सर्वत्र, एकत्र, अन्यत्र, पुरतः, पृष्ठतः, दक्षिणतः, वामतः उपरि, अधः का अभिनय करेंगे व करवायेंगे।
   (इसी प्रकार अन्य अव्ययों का वर्गीकरण करके गतिविधि कर सकते हैं।)

टीप – गतिविधि क्रमांक एक में दिये गये अव्यय को बदलकर स्वर सन्धि युक्त पदों को खोजने के लिए कहेंगे तथा समूह में चर्चा करेंगे।

सीखने का प्रतिफल – नए–नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए विभिन्न शब्दों से अव्यय को पहचान सकेंगे तथा शब्द ज्ञान में वृद्धि होगी शब्दकोश ही सहायता से अर्थ ज्ञान में भी वृद्धि कर सकेंगे।

गतिविधि – 2

संज्ञा/सर्वनाम शब्दों का बोध कराने के लिए सर्वप्रथम शिक्षक संज्ञा एवं सर्वनाम से संबंधित नाम का स्फोर कार्ड बनाएगा तथा अभिनय पूर्वक बोध करायेगा।

गतिविधि– सबसे पहले शिक्षक संज्ञा–आधारित स्फोरक पत्र (कार्ड) बनाएगा। जैसे–

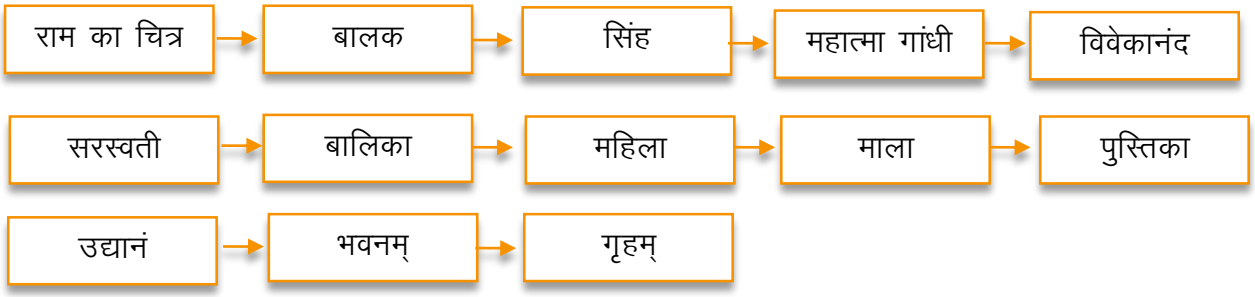

तत्पचात् इसी प्रकार एषः→ एषा→ एतत्→ सः→ सा→ तत्, इन शब्दों का भी स्फोर कार्ड बनाना है। जब शिक्षक कक्षा में प्रवेश करेंगे तब अपने हाथ में क्रमशः स्फोर कार्ड की सहायता से समीप अर्थ हेतु पुल्लिङ्ग में – एषः रामः, एषः बालकः, एषः सिंहः, एषः महात्मा गांधी, एषः विवेकानंदः स्त्रीलिङ्ग में – एषा सरस्वती, एषा बालिका, एषा महिला, एषा माला, एषा टिप्पणी–पुस्तिका, नपुंसकलिङ्ग में – एतत् उद्यानम्, एतत् गृहम्, एतत् यानम्।

दूर अर्थ हेतु – सः रामः, सः बालकः, सः सिंहः, सः महात्मा गांधी, सः विवेकानंदः, सा सरस्वती, सा बालिका, सा महिला, सा माला, सा पुस्तिका, तत् यानं, तत् गृहं, तत् उद्यानं। इस प्रकार अन्य शब्दों का बच्चों को अभ्यास करायें।

गतिविधि – 3

संख्यावाची पदों का बोध कराने के लिए शिक्षक स्फोर पत्र कार्ड चार्ट का निर्माण करेगा।

गतिविधि– शिक्षक संख्यावाची पदों को बताने के लिए सबसे पहले 1 से 20 तक तथा 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90, 100 तक के अंको का पृथक–पृथक स्फोरक निर्माण करेगा या चार्ट बनाएँगे। बच्चों को सबसे पहले 1 से 20 तक के अंकों को संस्कृत में क्या कहते हैं उसे अंकों और शब्दों में बोध कराएँगे। तत्पश्चात् 30 को त्रिंशत्, 40 को चत्वारिंशत्, 50 को पञ्चाशत्, 60 को षष्टिः, 70 को सप्ततिः, 80 को अशीतिः, 90 को नवतिः, 100 को शतम् ऐसा

बोध करायेंगे। उसके बाद छात्रों को दो भागों में बांटेंगे। दोनों समूहों में से एक–एक छात्र को आमंत्रित करेंगे और संस्कृत में संख्या बोलकर श्यामपट में अंक लिखने के लिए कहेंगे। यह क्रिया दस से पन्द्रह बार की जायेगी। बाद में दोनों समूहों को उनका प्राप्तांक बताया जायेगा। अंकों को शब्दों में तथा शब्दों को अंकों में अलग–अलग तरीके से भी बताया जा सकता है।

संस्कृत मे ०१ से ५० तक की गिनती

१ - एकम्	११ - एकादश	२१ - एकविंशति:	३१ - एकत्रिंशत्	४१ - एकचत्वारिंशत्
२ - द्वे	१२ - द्वादश	२२ - द्वाविंशति:	३२ - द्वात्रिंशत्	४२ - द्विचत्वारिंशत्
३ - त्रीणि	१३ - त्रयोदश	२३ - त्रयोविंशति:	३३ - त्रयस्त्रिंशत्	४३ - त्रिचत्वारिंशत्
४ - चत्वारि	१४ - चतुर्दश	२४ - चतुर्विंशति:	३४ - चतुस्त्रिंशत्	४४ - चतुश्चत्वारिंशत्
५ - पञ्च	१५ - पञ्चदश	२५ - पञ्चविंशति:	३५ - पञ्चत्रिंशत्	४५ - पञ्चचत्वारिंशत्
६ - षट्	१६ - षोडश	२६ - षड्विंशति:	३६ - षट्त्रिंशत्	४६ - षट्चत्वारिंशत्
७ - सप्त	१७ - सप्तदश	२७ - सप्तविंशति:	३७ - सप्तत्रिंशत्	४७ - सप्तचत्वारिंशत्
८ - अष्ट	१८ - अष्टादश	२८ - अष्टाविंशति:	३८ - अष्टत्रिंशत्	४८ - अष्टचत्वारिंशत्
९ - नव	१९ - नवदश	२९ - नवविंशति:	३९ - नवत्रिंशत्	४९ - नवचत्वारिंशत्
१० - दश	२० - विंशति:	३० - त्रिंशत्	४० - चत्वारिंशत्	५० - पञ्चाशत्

LS713 (ख) – नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते है और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

गतिविधि – 1

शिक्षक की भूमिका– सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा को पाँच से छः समूहों में विभाजित करेंगे। समूह बन जाने के बाद प्रत्येक समूह को प्रकृति चित्रण, पर्यावरण पर आधारित चित्र, पौराणिक पाठ पर आधारित चित्र व नैतिक मूल्यों पर आधारित चित्र प्रदान करेंगे। तत्पश्चात् समूहों को संबंधित चित्रों का अवलोकन करने उससे संबंधित तथ्यों को अपनी अपनी अभ्यासपुस्तिका में लिखने हेतु निर्देश देंगे। छात्र समूह अपने–अपने विषय पर आधारित नए–नए शब्दों को अपनी कापी में लिखेंगे, शिक्षक शब्दकोश में उन शब्दों के संस्कृत नाम ढूँढ़ना सीखाएँगें

प्रस्तुतीकरण– अब शिक्षक प्रथम समूह को विचाराभिव्यक्ति के लिए आमंत्रित करेंगे। प्रथम समूह प्रदत्त चित्र को श्यामपट पर बनायेगा। चित्र बनाकर संबंधित विषय के बारे में संस्कृत में 5 वाक्य लिखेगा और अन्य समूह भी श्यामपट में बने हुए चित्र को देखकर अपना विचार प्रकट करेंगे। इसी प्रकार अन्य सभी समूह भी क्रमवार अपने–अपने विषय का प्रस्तुतीकरण देगा और दूसरे समूहों से भी

विचार आमंत्रित करेगा। सभी समूह चित्राधारित नए–नए शब्दों को लिखेंगे और शब्दकोश की सहायता से उनके संस्कृत नाम जानकर बताएँगें।

यथा पर्यावरण पर आधारित चित्र.....

टीप – इसी प्रकार तालाब, नदी, उद्यान, त्योहार आदि का सरल आरेखीय चित्र संकलित कर गतिविधि के लिए दिया जावें।

(रेखाङ्कित पदों के संस्कृत नाम शब्दकोश की सहायता से ज्ञात करेंगे।)

वाक्य–

1. चित्र में बहुत से वृक्ष हैं।
2. पर्वत से पानी गिर रहा है।
3. पानी स्वच्छ दिखाई दे रहा है।
4. पक्षियाँ चहचहा रही हैं।
5. पशु–पक्षी झरने का पानी पी रहे हैं।

इसी प्रकार अन्य समूहों से भी विचार आमंत्रित करेंगे। तत्पश्चात् शिक्षक संबंधित वाक्य का संस्कृत में अनुवाद करेंगे।

शिक्षक कार्य–

1. चित्रे बहवः वृक्षाः सन्ति।
2. पर्वतात् जलं निर्झरति।
3. जलं स्वच्छं प्रतीयते।
4. खगाः कलरवं कुर्वन्ति।
5. पशु–पक्षिणः निर्झरस्य जलं पिबन्ति।

सीखने का प्रतिफल – इस प्रकार की गतिविधियों से छात्र किसी भी चित्र को देखकर संस्कृत के नए–नए शब्दों को खोजकर अर्थ समझते हुए अपने विचार अभिव्यक्त कर सकता है।

गतिविधि – 2

शिक्षक की भूमिका–

शिक्षक कक्षा कक्ष में प्रवेश कर छात्रों से नैतिक मूल्यों की बात करते हुए छात्रों को पाँच समूहों में बाँटेंगे। शिक्षक महापुरूषों के नाम पर आधारित समूहों का नामकरण अपनी सुविधानुसार करेंगे। पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार कार्ड बोर्ड में बने हुए चित्रों जैसे किसान, सैनिक, शिक्षक, वृद्ध, महापुरूष के चित्रों को समूह में बाँट देंगे। समूहों को संबंधित चित्रों के विचार हेतु 05 से 07 मिनट का समय दिया जाए। तत्पश्चात् छात्रों को निर्देशित किया जाए कि पाँचों चित्रों से बने हुए एक सपाट पासा फेंका जा रहा है जिसका चित्र ऊपर आयेगा वह समूह सर्वप्रथम प्रदर्शन करेगा और श्यामपट में संबंधित महापुरूष के विशेषताओं के बारे में पाँच वाक्य बोलेंगे। शिक्षक अन्य समूहों की सहायता से वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करेंगे।

इसी प्रकार पासे की सहायता से अन्य समूह क्रमवार आयेगा और संबंधित चित्र का प्रदर्शन करते हुए पाँच–पाँच वाक्य बोलेंगे और शिक्षक शब्दकोश की सहायता से संस्कृत के नए–नए शब्दों के अर्थ जानकर संस्कृत में अनुवाद करेंगे।

सीखने का प्रतिफल– इस प्रकार की गतिविधि से छात्र विभिन्न विषयों से संबंधित संस्कृत के नए–नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए शब्दकोश में देखकर अर्थ समझेगें और प्रयोग कर सकेंगे।

गतिविधि – 3

शिक्षक कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं को चार समूहों में विभक्ति कर सभी समूहों का नामकरण करेंगे, प्रत्येक समूह को क्रमशः गद्य, पद्य वार्तालाप व गीत पाठ देंगे। समूह के सदस्य प्रदत्त पाठ में से कठिन शब्दों को वर्णानुक्रम में जाकर क्रमशः चार्ट पेपर लिखेंगे, तथा लिखे हुए कठिन शब्दों को कक्षा–कक्ष में सभी अन्य समूहों को भी बताएँगें। अब शिक्षक चार पर्ची का निर्माण करेंगें जिसमें प्रत्येक में गीत, गद्य, पद्य, वार्तालाप लिखा रहेगा सभी समूह से एक–एक छात्र आकर एक–एक पर्ची उठाएँगे तथा जो पर्ची में लिखा मिलेगा उससे संबंधित समूह से कठिन शब्दों का चार्ट पेपर लेकर शब्दकोश की सहायता से चार्ट पेपर पर अर्थ लिखकर पुनः कक्षा–कक्ष में प्रदर्शन करेंगें। गतिविधि के बाद चार्ट पेपर कक्षा–कक्ष में चिपकाएँगे।

जैसे– पद्य पाठः ,षोडशः पाठः, नीतिनवनीताति

कठिन शब्द	अर्थ
अयम्	
आप्नोति	
उदारचरितानाम्	
कुटुम्बकम्	
गांवः	
गणना	

सीखने का प्रतिफल – नए शब्दों के प्रतिफल जिज्ञासा बढ़ेगी अर्थज्ञान होगा, साथ ही साथ छात्र शब्दकोश देखना सीखेंगे।

Ls 716- कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाते हैं।

गतिविधि – 1

शिक्षक सर्वप्रथम श्यामपट पर कारक चिह्न लिखेंगे

कर्ता	प्रथमा	ने
कर्म	द्वितीया	को
करण	तृतीया	से, के लिए
सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए, को
अपादान	पञ्चमी	से, अलग होने में
संबंध	षष्ठी	का, के, की
अधिकरण	सप्तमी	में, पर, ऊपर

इन कारक चिह्नों का वाचन करावें
सभी छात्र–छात्राओं को सात समूह में विभक्त कर कर्ता, कर्म आदि नामकरण करें। प्रत्येक समूह को अपने नाम के अनुरूप 10–10 वाक्य मातृभाषा में बनाकर अपने–अपने अभ्यास पुस्तिका में लिखकर कक्षा–कक्ष में प्रदर्शन करें–
जैसे – कर्ता – राम ने कहा।
गजेन्द्र ने लिखा।
कर्म – पानी को पी लिया
गांव को गया। आदि
शिक्षक की सहायता से छात्र उक्त वाक्यों को संस्कृत में अनुवाद सीखनें का प्रतिफल करेंगे। छात्र कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग करते हुए कारक, विभक्ति, व विभक्ति चिह्नों से परिचित होंगे।

गतिविधि – 2

सभी छात्र–छात्राओं को पाँच समूह में विभक्त कर, उनके समूह नायक पाठ्यपुस्तक लेकर शिक्षक के पास आएँगें, शिक्षक किसी पाठ को खोलकर उस पाठ से कारक विभक्तियों से युक्त शब्द अभ्यास पुस्तिका में लिखने देगा, समय निर्धारित शिक्षक करेंगे। निर्धारित समय में जो समूह सर्वाधिक विभक्ति सहीं–सहीं लिखेगा, और कक्षा–कक्ष में प्रदर्शन करेगा वह विजयी होगा।
जैसे– दशमः पाठः
छत्तीसगढराज्यस्यं लोकभाषा–

प्रयुक्त शब्द	मूल शब्द	विभक्ति
राज्यस्य	राज्य	षष्ठी विभक्ति एकवचन
लोकभाषाणाम्	लोकभाषा	षष्ठी विभक्ति बहुवचन
राज्ये	राज्य	सप्तमी विभक्ति एकवचन
जनाः	जन	प्रथमा विभक्ति बहुवचन

इस प्रकार समूह द्वारा खोजे हुए शब्दों के अर्थ अन्य छात्र शिक्षक की सहायता से जान सकेंगे।

सीखने का प्रतिफल – पाठ में प्रयुक्त कारक विभक्तियों के प्रयोग को देखकर छात्र–छात्राएँ इनका प्रयोग अपने दैनिक जीवन में कर सकेंगे।

गतिविधि – 3

शिक्षक एक बड़ा चार्ट का निर्माण करेंगे, जिसमें सभी कारक, विभक्तियों से युक्त लगभग 100 शब्द लिखे हो। उस चार्ट को कक्षा–कक्ष में अवलोकन हेतु लटकाएँगें। एक पात्र में बहुत से पर्ची बनाएँगें जिनमें प्रत्येक में एक विभक्ति का नाम या विभक्ति चिह्न लिखा होगा। यह गतिविधि सामूहिक न होकर वैयक्तिक होगा। एक–एक छात्र क्रमशः आकर पर्ची उठाएँगें और दिए गए विभक्ति या चिह्न आधारित शब्द चार्ट में खोजेंगे। प्रत्येक छात्र को एक मिनट का समय मिलेगा। सही बताने पर चार्ट में उस शब्द का (x) निशान शिक्षक लगाएँगें, ताकि आगे आनें वाले छात्र उसको न बताए किन्तु नया शब्द खोज सकें।

सीखने का प्रतिफल – छात्र छात्राएँ विभिन्न शब्दों में से सही–सही कारक, विभक्तियों को पहचान सकेगा तथा अपने दैनिक जीवन में उनका सही प्रयोग करने में समर्थ होगा।

LS717 विभक्तियों लकारों का उचित प्रयोग कर वाक्य बना पाते हैं।

गतिविधि – 1

भाग 1 – सर्वप्रथम शिक्षक एक पाशा का निर्माण करेगा। पाशा के प्रत्येक फलक में क्रमशः प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, सप्तमी विभक्तियों के नाम लिखेंगे। छात्रों को 6–6 के समूह में विभक्त करेंगें। समूह के प्रत्येक छात्र अपने पास एक पाठ्य पुस्तक रखेंगे। प्रत्येक समूह पाशा खेलकर कोई एक विभक्ति प्राप्त करेगा। प्राप्त विभक्त्याधारित शब्दों का सङ्कलन अपनी पाठ्यपुस्तक से प्राप्त करेगा। इसी तरह प्रत्येक समूह एक–एक विभक्ति प्राप्तकर विभक्तयाधारित शब्दों की सूची बनाकर शिक्षक के समक्ष लिखित एवं मौखिक रूप में प्रस्तुत करेगा।

भाग 2 – उपर्युक्त पाशा में ही सन्धि की भी गतिविधि की जा सकेगी, इसमें स्वर सन्धि के भेद जैसे, दीर्धस्वर सन्धि, गुणस्वर सन्धि, यणस्वर सन्धि, वृद्धिस्वर सन्धि, अयादिस्वर सन्धि, पूर्वरूप सन्धि, लिखकर प्रत्येक फलक में चिपकाकर रखेंगे। प्रत्येक समूह पाशा चलाकर आए हुए फलक के अनुसार शिक्षक द्वारा निर्धारित पाठ से खोज कर लिखेंगे तथा कक्षा में उसका प्रदर्शन भी करेंगे।

टीप– इसी प्रकार समास, लिङ्ग वचन, पुरूष आदि से सम्बन्धित गतिविधियाँ कर सकेंगे।

भाग 3 – समान आकार वाले कागज चिपकाते हुए गत्ते में लकार जैसे– लट्लकार, लृट्लकार आदि लिखकर उसमें किसी एक धातु रूप लिखेंगे जैसे–

पठ् धातु
लट्लकार (वर्तमान काल)

प्र.पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
म.पु.	पठसि	पठथः	पठय
उ.पु.	पठामि	पठावः	पठामः

छात्रों की संख्या के अनुसार लकारों के नाम लिखे हुए पर्याप्त गत्ते के टुकड़े बनायेंगे और एक–एक गत्ते सभी को वितरित करेंगे। अब कुछ धातु लिखकर पर्ची बनाएगें, सभी छात्र एक एक पर्ची उठाएगें, और उसमें लिखे धातु के रूप गत्ते में लिखे रूप के अनुसार अपने–अपने अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे, तथा कक्षा कक्ष में प्रदर्शन करेंगे। जिनसे गलती न हो या न्यूनतम हो वह विजेता होगा। गलतियों को शिक्षक की सहायता से सुधार भी करेंगे।

गतिविधि – 2

इसके पश्चात् शिक्षक कर्तृपद के साथ क्रियापद को जोड़कर बताएगें

यथा

कर्तृपद	क्रियापद	वाक्य	अर्थ
बालकः	पठति	बालक पठति	बालक पढता हैं।
बालकौ	पठतः	बालकौ पठतः	दो बालक पढ़ते हैं।
बालकाः	पठन्ति	बालकाः पठन्ति	बालक पढ़ते हैं।
त्वं	पठसि	त्वं पठसि	तुम पढ़ते हो।
युवां	पठथः	युवां पठथः	तुम दोनों पढ़ते हो।
यूययं	पठथ	यूवां पठथः	तुम सब पढ़ते हो।
अहं	पठामि	अहं पठामि	मै पढ़ता हूँ।
आवां	पठावः	आवां पठावः	हम दोनों पढ़ते हैं।
वयं	पठामः	वयं पठामः	हम सब पढ़ते हैं।

फलक में दिए गए कर्तृपद–क्रियापद के क्रम को बदलकर उचित वाक्य निर्माण करने हेतु छात्रों को प्रेरित करेंगे।

सीखने का प्रतिफल : बच्चे लकारों को समझकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। व्यावहारिक जीवन में संस्कृत के छोटे–छोटे वाक्य निर्माण करने में समर्थ होंगे।

गतिविधि – 3

संस्कृत में अपना परिचय देने के साथ ही विभिन्न विषयों–जैसे, विद्यालय, धेनु, उद्यानम्, गृहम् आदि पर संस्कृत के छोटे–छोटे सरल वाक्यों में अपने विचार व्यक्त कर सकते है। (लगभग 5 से 10 वाक्यों में)

शिक्षक की भूमिका – सभी छात्र–छात्राओं को समूह में बांटे एवं प्रत्येक समूह के सदस्यों को क्रमशः बुलाकर गतिविधि कराकर कक्षाकक्ष में प्रदर्शन करावें।

विद्यालय का चित्र दिखाकर तीनों खण्ड से शब्द चुनकर सार्थक वाक्य बनाएगें।

विद्यालये अहं प्रतिदिनं पाठं पठित्वा शिक्षकाः मम विद्यालयः विद्यालयं एषः	विद्यालयं मनोयोगेन परितः वृक्षाः प्रधानाचार्यः एकः पुस्तकालयः गृहस्य समीपे एकः उद्यानम् पंचदशः शिक्षकाः विद्यालयात् गृहं	अस्ति सन्ति पाठयन्ति गच्छामि अस्ति

(रेखाकित पदों की विभक्ति/लकार खोजकर अभ्यास पुस्तिका में लिखें तथा कक्षाकक्ष में प्रदर्शन करें)

जैसे – एषः मम विद्यालयः अस्ति।

अहं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि।

विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति। आदि –

टीप– इसी प्रकार धेनु, गृहम्, उद्यानम् आदि विषयों पर भी तालिका बनाकर अभ्यास करावें।

सीखने का प्रतिफल : छात्र वाक्य में प्रयोग करना सीखेंगे साथ ही साथ वाक्य में प्रयुक्त विभक्तियों/लकारों को पहचान भी कर सकेंगे।

LS805 : लकारों का व्यावहारिक प्रयोग भी कर सकते हैं। सन्धि, समास, कारक, लिंग, विभक्ति, वचन व पुरूष के विषय में सामान्य जानकारी रखते हैं व प्रयोग करते हैं।

गतिविधि – 1

शिक्षक कार्य : शिक्षक सर्वप्रथम काष्ठ, मृदा, लौह अथवा प्लास्टिक से छः कोणों वाला पाशा का निर्माण करेगा। पाशा के प्रत्येक भाग में क्रमशः लट्लकार, दीर्घ सन्धि, विभक्ति, प्रत्यय, अव्यय, उपसर्ग लिखेंगे तथा छात्रों को छः–छः समूह में बांटेंगे।

पाठ्यपुस्तक लेकर एक–एक समूह शिक्षक के पास आयेंगे और किसी पात्र में पाशा को रखकर संचालन करेंगे। पाशे के ऊपरी भाग में व्याकरण का जो प्रकरण आयेगा। उससे संबंधित शब्द–विस्तार पाठ्य पुस्तक के किसी एक पाठ से खोजेंगे। यह प्रक्रिया अन्य समूहों के द्वारा भी पूरी की जायेगी। लकार, सन्धि, विभक्ति, प्रत्यय, अव्यय, उपसर्ग में से जो भी प्रकरण प्राप्त होगा उसको पाठ्यपुस्तक के किसी पाठ से खोजेंगे तथा शिक्षक को दिखायेंगे।

सीखने का प्रतिफल : इस प्रकार की गतिविधि से छात्रों में लकारों, संधि, समास, कारक, लिङ्ग, विभक्ति, वचन व पुरूष की विशेष समझ विकसित होगी।

गतिविधि – 2

कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं को सात समूह में बाटेंगे, सभी समूहों से एक–एक छात्र का चयन उनके नाम के प्रथम वर्ण के अनुरूप करेंगे– जैसे, प्रथम समूह में अवर्ण से प्रारंम्भ नाम वाला छात्र, द्वितीय समूह में इ वर्ण से, तृतीय समूह में ''उ'' वर्ण से तथा इसी प्रकार सभी समूहों से एक–एक, इस प्रकार कुल सात विद्यार्थी अपने–अपने समूह के नायक होंगे।

अब दलनायकों के सामने सन्धि, समास, कारक, लिङ्ग, विभक्ति, वचन, पुरूष तथा काल लिखी हुई सात पर्चियाँ एक पात्र में रखेंगे। प्रत्येक दलनायक एक–एक पर्ची उठाएगें तथा उसमें लिखे हुए पद के क्रम से शिक्षक द्वारा प्रदत्त पाठ में प्रयुक्त शब्दों को चुनकर, अपनी–अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे, और एक चार्ट का निर्माण करेंगे।

जैसः– सन्धि लिखी हुई पर्ची, जिस दल को मिलेगी उस दल के सदस्य प्रदत्त पाठ में से सन्धि युक्त पदों को खोजकर लिखेंगे–

प्रदत्त पाठ – षष्ठः पाठः – प्राच्यनगरी सिरपुरम्

सन्धि पद		**विच्छेद**		**प्रकार**
महानद्यास्तीरे	–	महानद्याः + तीरे	=	विसर्ग सन्धि
राज्यान्तर्गते	–	राज्य + अन्तर्गते	=	दीर्घस्वर सन्धि
कालान्तरे	–	काल + अन्तरे	=	दीर्घस्वर सन्धि

इन उदाहरणों को, समूह द्वारा सभी के समक्ष प्रस्तुतीकरण किया जायेंगा। जो दल कम–से–कम गलतियां करेगा व विजेता होगा।

इसी प्रकार सभी दल प्राप्त पर्ची के अनुसार कार्य कर उसका प्रदर्शन करेंगे।

सीखने का प्रतिफल : इस प्रकार की गतिविधि से छात्र व्याकरण का व्यावहारिक प्रयोग कर अपनी समझ विकसित कर सकते हैं।

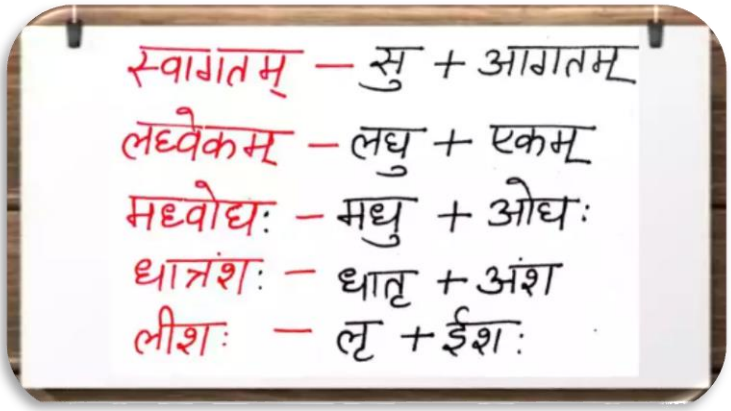

गतिविधि – 3

शिक्षक कार्यः – शिक्षक सांप–सीढ़ी के खेल के फलक का निर्माण करेंगे

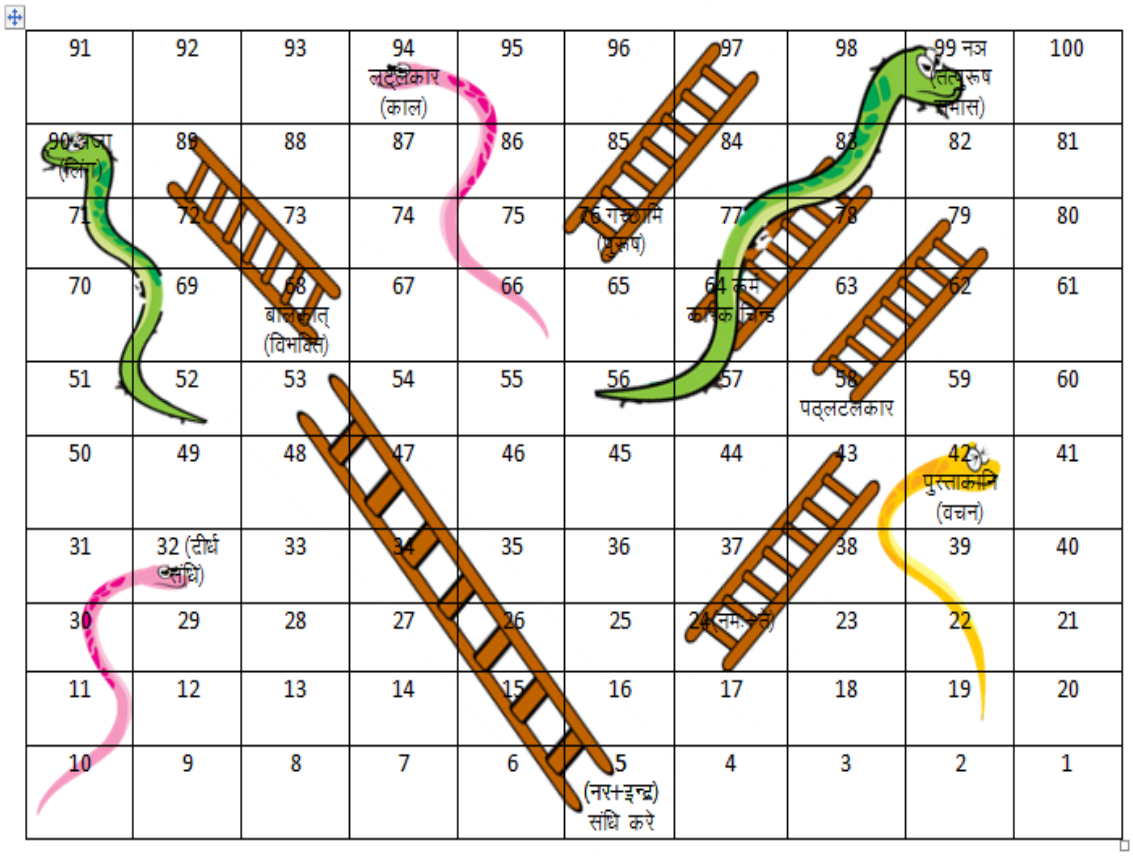

खाना–संख्या के अनुसार निर्दिष्ट कार्य–

5– नर+इन्द्रः का सन्धि कीजिए।

24– नमः+ते का सन्धि कीजिए।

32– दीर्घ सन्धि का कोई एक उदा. दीजिए।

42– 'पुस्तकानि' पद का वचन बताइए।

58– 'पठ्' धातु का लट्लकार प्र.पु. एकवचन बताइए।

64– 'कर्म कारक' का चिह्न बताइए।

68– 'बालकात् शब्द की विभक्ति बताइए।

76– 'गच्छामि' पद का पुरूष बताइए।

90– 'अजा' पद का लिङ्ग बताइए।

94– 'लृट्लकार' को हिन्दी में कौन सा काल कहते हैं।

99– 'नञ् तत्पुरूष समास का उदा. बताइए।

खेल के नियम

– छः फलक वाला पाशा जिसके प्रत्येक फलक पर एक से छः अंक अंकित होंगे। उसे चलाने पर जो अंक आएगा, उतना खाना आगे बढ़ेगा।

– भिन्न–भिन्न रंग की गोटियाँ, जो खेल में भाग लेने वाले छात्र का परिचायक होगा।

– सीढ़ी वाले खाने में आने पर उसमें दिए गए कार्य के निर्देश सही करने पर सीढ़ी से ऊपर चढ़ सकेंगे।

– सांप के मुख वाले खाने में दिए कार्य का हल करने पर सांप नही काटेगा और वह वहीं रहेगा। उत्तर गलत देने या नहीं देने पर पूंछ के अन्तिम छोर वाले खाने में चला जाएगा।

सीखने का प्रतिफल : इस प्रकार की गतिविधि छात्रों में सन्धि व लकारों का सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

LS811 विभिन्न विषयों उद्देश्यों में लिए उचित व्याकरणिक तत्त्वों का उपयोग करते हैं।

गतिविध – 1

नवमः पाठः षड्ऋतुवर्णनम् पाठ से सभी ऋतुओं के चित्र अलग–अलग सग्रंह करेंगे। पाठ में प्रयुक्त ऋतुओं से सम्बन्धित वाक्यों को क्रम से हटाकर मिश्रित कर देंगे।

गतिविधि– 1 छात्रों के छः समूह बनाकर प्रत्येक समूह को एक–एक चित्र देकर उससे संबंधित वाक्यों को सही क्रम से लिखने के लिए कहेंगे, तथा विभिन्न व्याकरणित तत्त्वों को छॉट कर लिखेंगे तथा उनका उपयोग करेंगें।

यथा – ग्रीष्म ऋतु का चित्र.....

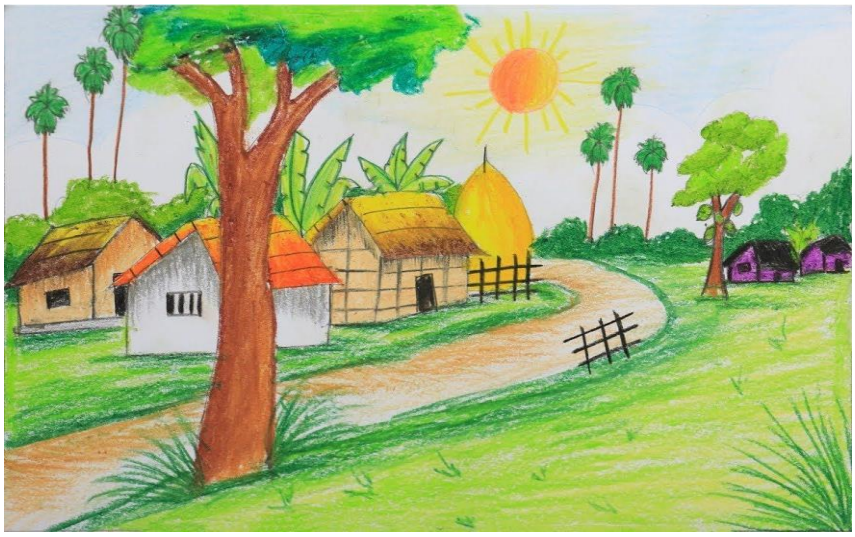

वाक्य – समशीतोष्ण वातावरणं वसन्ते भवति।

जलदः स्वजलधाराभिः पृथिवीं पूरयति।

शीताः पवनाः प्रवहन्ति।

हरितवर्णाम्रफलं पक्वा पीतायते।

कृषकाः कृषिं भूमिं हलेन कर्षन्ति, बीजं वपन्ति च।

प्रचण्डसूर्यतापेन धरा तपति।

वसन्ते गते ग्रीष्म आगच्छति

ग्रीष्म ऋतु के वाक्य – 1. वसन्ते गते ग्रीष्मः आगच्छति।

2. प्रचण्ड सूर्यतापेन धरा तपति।

3. हरितवर्णाम्रफलं पक्वा पीतायते।

व्याकरणिक तत्त्व–

अव्यय	शब्द रूप	पवनाः	हलेन	जलधाराभिः
च	वसन्ते वसन्त सप्तमी विभक्ति एकवचन	पवन–प्रथमा विभक्ति बहुवचन	हल–तृतीया विभक्ति एकवचन	जलधारा–तृतीया विभक्ति बहुवचन

धातुरूप

भवति	भू	धातु	लट्लकार	प्रथम पुरूष	एकवचन
तपति	तप्	धातु	लट्लकार	प्रथम पुरूष	एकवचन
पूरयति	पूर	धातु	लट्लकार	प्रथम पुरूष	एकवचन
कर्षन्ति	कर्ष	धातु	लट्लकार	प्रथम पुरूष	बहुवचन
आगच्छति	आ+गम्	धातु	लट्लकार	प्रथम पुरूष	एकवचन

शिक्षक की सहायता से उपर्युक्त व्याकरणिक तत्त्वों का छात्र प्रयोग कर नए–नए वाक्य बनाएँगे।

सीखने का प्रतिफल– इस प्रकार की गतिविधि से छात्र विभिन्न विषयों में लिए उचित व्याकरणिक तत्त्वों की खोज कर उपयोग कर सकेंगे।

गतिविधि – 2

शिक्षक क्रिया व गतिविधि– शिक्षक पाँच लकारों की चर्चा करते हुए कक्षा को पाँच समूह में बाँट देंगे, प्रथम समूह को लट्लकार, द्वितीय को लृट्लकार, तृतीय को ललकार, चतुर्थ को लोट्लकार और पचम समूह को विधिलिङ्ग लकार से संबंधित नौ–नौ वाक्य बनाने हेतु निर्देशित करेंगे। सभी समूह चार्ट पर संबंधित लकार के नौ–नौ वाक्यों को लिखेंगे। अब शिक्षक प्रथम समूह के छात्रों को सामने आमंत्रित कर वाक्य से संबंधित लकार पुरूष, वचन, संज्ञा, सर्वनाम को पूछेंगे और समूह के छात्र से भी लकार, पुरूष वचन, संज्ञा, सर्वनाम से संबंधित प्रश्न करेंगे एवं समूह के छात्र उन प्रश्नों के वाक्यों की संरचना को समझते हुए सटीकता से उत्तर देंगे।

सीखने का प्रतिफल– इस गतिविधि के द्वारा छात्र वाक्य–संरचना की बारीकी को समझते हुए, अनुमान लगाकर उचित व्याकरणिक तत्त्वों का उपयोग कर सकेंगे।

गतिविधि – 3

शिक्षक क्रिया एवं गतिविधि–

शिक्षक कक्षा में प्रवेश कर समास व उनके प्रकारों के बारे में सक्षिप्त चर्चा करेंगे। तत्पश्चात् कक्षा को छः समूहों में बाँट देंगे, और प्रथम समूह को अव्ययीभाव समास, द्वितीय को तत्पुरूष, तृतीय को द्विगु, चतुर्थ को कर्मधारय, पञ्चम को द्विगु और षष्ठ समूह को द्वन्द्व समास से संबंधित कार्य देंगे। सभी समूह संबंधित समास को 05 से 07 मिनट तक अध्ययन करेंगे। तत्पश्चात् क्रमवार प्रस्तुतीकरण देंगे। शिक्षक प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुत विषयवस्तु से संबंधित चार–चार प्रश्न श्यामपट पर लिखेंगे। अलग–अलग समूह को अलग–अलग समास के बारे प्रश्न करेंगे। जो समूह विषय की बारीकी को समझते हुए सबसे ज्यादा उत्तर देता है वह समूह विजयी घोषित होगा।

सीखने का प्रतिफल– इस गतिविधि के द्वारा छात्र समास की बारीकी को समझते हुए अनुमान लगाते हुए उत्तर देने में सफल हो जाते हैं।

LS808 : पाठ्य विषय में संवाद एवं नाट्य पाठ को हाव–भाव के साथ पढ़ सकते हैं। हिन्दी के छोटे व सरल वाक्यों को संस्कृत में एवं संस्कृत वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद कर सकते हैं।

गतिविधि – 1

सर्वप्रथम शिक्षक स्फोरक कार्ड का सङ्कलन निर्माण करेंगे। स्फोरक कार्ड में क्रिया पदों को बताने वाले चित्र उल्लिखित हों या हिन्दी के क्रियापद लिखे हों। जैसे पञ्चदशः पाठः प्रकृतिर्वेदना वार्तालापाधारित है, जिसमें अनेक क्रियापद समागत हैं।

गतिविधि – शिक्षक कक्षा में प्रवेश कर सर्वप्रथम छात्रों को चार–चार की टोली में विभक्त करेगा। प्रत्येक टोली से चार–चार प्रश्न पूछेंगे। सही उत्तर देने वाले समूह को एक अङ्क प्रदान किया जायेगा। उत्तर न दे पाने की स्थिति में प्रश्न को अगले समूह को पास कर दिया जायेगा। प्रश्न का स्वरूप इस प्रकार होगा – जैसे

1. सः फलं..... । (खाते हुए बच्चे का चित्र प्रदर्शित करेंगे।)

2. सा जलं..... । (जल पीती हुई बालिका चित्र)

3. अश्वाः..... । (दौड़ते अनेक घोड़ों का चित्र)

4. बालकाः..... । (खेलते हुए बालकों का चित्र)

5. महिला..... । (नृत्य करती हुई महिला का चित्र)

इसी प्रकार अनेकानेक क्रिया पदों को स्फोरक कार्ड में लिखकर प्रयोग करेंगे।

सीखने का प्रतिफल – छात्र इस प्रकार की गतिविधियों से संवाद एवं नाट्य पाठों को हाव–भाव पूर्वक पढ़कर संस्कृत में अनुवाद कर सकेंगे।

गतिविधि – 2

तालिका में तीन खण्ड दिये गये हैं– कर्ता, कर्म और क्रिया। तीनों खण्डों में से एक–एक शब्द लेकर सार्थक वाक्य बनायेंगे। उसके पश्चात् निर्मित वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद करेंगे।

कर्ता	कर्म	क्रिया
रामः	पुस्तकं वनं	खादामि पठति
अहं	भोजनं कार्यं	गच्छति करोषि
त्वं	पाठं मधुरम	पचसि पठामि

उपर्युक्त तालिका से छः सार्थक वाक्य बनायेंगे–

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

6. .....

उपर्युक्त वाक्यों का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करेंगे–

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

6. .....

सीखने का प्रतिफल – इस प्रकार की गतिविधि से सार्थक वाक्य बना सकेंगे। हाव–भाव के साथ वाक्यों का पढ़ सकेंगे। छोटे तथा सरल वाक्यों को संस्कृत में अनुवाद करने में दक्ष हो सकेंगे।

गतिविधि – 3

विविध पाठ में आये च, आम्, न, अस्ति, नास्ति शब्दों का प्रयोग व्यवहारिक रूप में कर सकते हैं। छात्र और शिक्षक संस्कृत में परस्पर वार्तालाप कर सकते हैं। शिक्षक विभिन्न वस्तुओं को एकत्र करेंगे। वस्तुओं आधार पर च, आम, न, अस्ति, नास्ति का प्रयोग करेंगे।

वस्तु	शिक्षक क्रिया	छात्र क्रिया
रस्सी	रज्जुः सर्पः	अस्ति नास्ति
गिलास	चषकः जलं	अस्ति नास्ति
मोबाइल	दूरवाणी दूरदर्शनम्	अस्ति नास्ति
"च" प्रयोग	अहं चायं, काफीं च पिबामि। अहं सूपं शाकं च खादामि। अहं जलं तक्रं च पिबामि।	छात्र समझकर अन्य वाक्य बोलेंगे।

उपर्युक्त उदाहरणों की सहायता से अन्य उपयोगी वस्तु को लेकर प्रयोग करेंगे तथा अभ्यास करेंगे।

सीखने का प्रतिफल– इस प्रकार की गतिविधि से संस्कृत निष्ठ शब्दों का संकलन कर सकने में समर्थ हो कर छोटे–छोटे वाक्यों में प्रयोग करने में दक्ष हो सकेंगे।

संदर्भ

जिनका अवलोकन अवश्य करें –

- लर्निंग विद्आउट बर्डन, 1993, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
- सोर्स बुक ऑन असेसमेंट फार क्लास I-IV; एन्वायमेंटल स्टीजड, 2008 एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन, नई दिल्ली

परिशिष्ट

Class 6	
LS601	स्थानीय भाषा के शब्दों यथा राँधना, खाना, चलना, खेलना शब्दों को संस्कृत में व्यक्त करते हैं।
LS602	दैनिक जीवन में प्रयुक्त सामग्रियों के नाम संस्कृत में प्रस्तुत करते है - जैसे सब्जी-शाकः फल-फलम्, पेड़-वृक्षः छत्ता-छत्रम्, पानी-जलम्, पेन-लेखनी।
LS603	संस्कृत के गद्य एवं पद्य (श्लोको) को सही उच्चारण के साथ पढ़ते हैं।
LS604	अपने परिवेश में मौजूद लोक कथाओं एवं लोकगीतों के नाम को संस्कृत में प्रस्तुत करते हैं। जैसे - सुआ नृत्य - शुकनृत्यम्, डण्डा नाच - दण्डनृत्यम्, चूलमाटी गीत- चूलमाटी गीतम् आदि।
LS605	पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु के संस्कृत शब्दों को शुद्व रूप से लिखते हैं।
LS606	संवादात्मक पाठो को हावभाव के अनुसार पढ़ सकते है।
LS607	संस्कृत के नये-नये शब्दों के अर्थ संग्रह कर शब्द भण्डार में वृद्धि करते हैं।
LS608	कथा यात्रा वृत्तान्त, मेला तथा पर्यावरण से संबंधित पाठों के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
LS609	किसी पाठ्यवस्तु की बारिकी से जांच करते हुए उनमे दिए विशेष बिन्दु को खोजते है। अनुमान लगाते है निष्कर्ष निकालते है।
LS610	विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार चढ़ाव के साथ पढ़ लिख पाते है।
LS611	नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते है और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते है।
LS612	विभिन्न अवसरों पर कही जा रही बातों को अपने ढंग में लिखते है।
LS613	विभिन्न विषयों उद्देश्यों में लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते है।
LS614	कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाते है।
LS615	विभाग्रियों/लकारो का प्रयोग दैनिक जीवन में कर पाते है।
LS616	किसी नवीन विषय पर विचार व्यक्त कर पाते है।

Class 7

LS701	दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों यन्त्रों के नाम को संस्कृत में व्यक्त कर सकते हैं -
LS702	काल रचना के अंतर्गत लट, लड्. एवं लृटलकार के रूपों के प्रयोग कर सकते है।
LS703	पाठ्यवस्तु पर सामूहिक चर्चा कर एक दूसरे के विचारों का आदान प्रदान कर सकते हैं।
LS704	अपनी भाषा के शब्दों को संस्कृत शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। यथा - दैनिक उपयोगी वस्तुओं के नाम, पशु पक्षियों के नाम।
LS705	गद्य एवं पद्य पाठ को सही उच्चारण के साथ पढ़ लिख सकते हैं।
LS706	संस्कृत में लिखित लेख कहानी व श्लोको को शुद्वोच्चारण के साथ पढ़ते हैं।
LS707	सूक्तियों/शुभाषित श्लोको को शुद्धोंच्चारण के साथ पढ़ने व निहित भाव को समझते हैं।
LS708	कथा यात्रा वृत्तान्त, मेला पर्यावरण से संबंधित पाठों के सारांश को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते है।
LS709	व्याकरणिक नियमों का छोटे-छोटे व्याक्यों में पालन कर सकते है।
LS710	पाठ्यपुस्तक में लिखित संवाद पाठ को पढ़कर आपस में छोटे-छोटे संवाद कर पाते है अथवा परिचय दे सकते हैं।
LS711	किसी पाठ्यवस्तु की बारिकी से जांच करते हुए उनमे दिए विशेष बिन्दु को खोजते है। अनुमान लगाते है निष्कर्ष निकालते है।
LS712	विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार चढ़ाव के साथ पढ़ लिख पाते है।
LS713	नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते है और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते है।
LS714	विभिन्न अवसरों पर कही जा रही बातों को अपने ढंग में लिखते है।
LS715	विभिन्न विषयों उद्देश्यों के लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते है।
LS716	कारक विभक्तियों का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाते है।
LS717	विभक्तियों/लकारो का उचित प्रयोग कर वाक्य बना पाते है।

Class 8

LS801	शरीर के अंगों के नाम शाक, पुष्प, फल, दैनिक उपयोगी वस्तुओं के नाम पशु-पक्षियों के नाम विद्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामग्रियों के नाम संबंधी आदि को संस्कृत में व्यक्त कर सकते है।
LS802	पाठ्यवस्तु में निहित पाठों के उद्देश्यों को व्यावहारिक जीवन में व्यवहार में ला सकते हैं।
LS803	पाठ्यविषय में निहित पाठों के संदर्भ में सामूहिक चर्चा करते हैं। एक दूसरे से प्रश्न भी करते हैं तथा अपना विचार भी देते हैं।
LS804	संस्कृत में अपना परिचय देने के साथ ही विभिन्न विषयों जैसे- विद्यालय, धेनु, उद्यानम्, गृहम् आदि विषयों पर संस्कृत के छोटे-छोटे सरल वाक्यों में अपना विचार व्यक्त कर सकते है। (लगभग 5 से 10 वाक्यों में)
LS805	लकारों का व्यावहारिक प्रयोग भी कर सकते हैं। संधि, समास, कारक, लिंग, विभक्ति, वचन, पुरूषकाल के विषय में सामान्य जानकारी रखते है व प्रयोग करते है।
LS806	प्राकृति चित्रण, पर्यावरण पौराणिक पाठों नैतिक मूल्यों से संबधित पाठों के मूल्यों को जान सकते हैं। समझकर व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं।
LS807	पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित गद्य, पद्य, कहानी, नाटक आदि पाठों में प्रयुक्त कठिन संस्कृत शब्दों के अर्थ जानते हैं तथा शब्दार्थों का संग्रह भी करते हैं। आवश्यकता अनुसार प्रयोग करते हैं।
LS808	पाठ्यविषय में संवाद एवं नाट्य पाठ को हावभाव के साथ पढ़ सकते हैं। हिन्दी के छोटे व सरल वाक्यों को संस्कृत में एवं संस्कृत के सरल वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद कर सकते हैं।
LS809	किसी पाठ्यवस्तु की बारिकी से जांच करते हुए उनमे दिए विशेष बिन्दु को खोजते है। अनुमान लगाते है निष्कर्ष निकालते है।
LS810	नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते है और उसका अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते है।
LS811	विभिन्न विषयों उद्देश्यों में लिए उचित व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करते है।
LS812	विभिन्न अवसरों पर कही जा रही बातों को अपने ढंग में लिखते है।
LS813	कारक चिन्हों/विभाग्रियों/लकारो का प्रयोग दैनिक जीवन में कर पाते है।

Class 6th		Subject - Sanskrit													
		Competency level योग्यता विस्तार				Context प्रसंग / संदर्भ				Response Typeप्रतिक्रिया प्रकार		Type of questions प्रश्नो के प्रकार			
	Lo Tagged	I	II	III	IV	Social	Personal	Vocational	Educational	Selected	Constructed	VSA 1 mark	SA 2 mark	LA 3 mark	VLA 5 mark
sec -A Reading					01 x 05 = 05						01				01
sec -B Writing			01 x 02 = 02	01 x 05 = 05 01 x 03 = 03							03		01	01	01
sec - c Grammar		04 x 01 = 04 01 x 02 = 02	02 x 02 = 04							04	03	04	03		
Sec - D Literature		01 x 01 = 01	01 x 02 = 02 03 x 03 = 09	01 x 03 = 03						01	05	01	01	04	
Total QS		06	07	03	01							05	05	05	02
Total Marks		07	17	11	05							05	10	15	10
Question - Wise %		35	41	18	06										
Marks - Wise		17.5	42.5	27.5	12.5										

TDM

Class 7th		Subject - Sanskrit													
		Competency level योग्यता विस्तार				Context प्रसंग/संदर्भ				Response Typeअनुक्रियाप्रकार		Type of questions प्रश्नो के प्रकार			
	Lo Tagged	I	II	III	IV	Social	Personal	Vocational	Educational	Selected	Constructed	VSA 1 mark	SA 2 mark	LA 3 mark	VLA 5 mark
sec -A Reading					01 x 05 = 05						01				01
sec -B Writing			01 x 02 = 02	01 x 05 = 05 01 x 03 = 03							03		01	01	01
sec - c Grammar		04 x 01 = 04 01 x 02 = 02	02 x 02 = 04							04	03	04	03		
Sec - D Literature		01 x 01 = 01	01 x 02 = 02 03 x 03 = 09	01 x 03 = 03						01	05	01	01	04	
Total QS		06	07	03	01							05	05	05	02
Total Marks		07	17	11	05							05	10	15	10
Question - Wise %		35	41	18	06										
Marks - Wise		17.5	42.5	27.5	12.5										

TDM

Class 8th	Subject - Sanskrit														
		Competency level योग्यता विस्तार				Context प्रसंग/संदर्भ				Response Typeअनुक्रिया प्रकार		Type of questions प्रश्नो के प्रकार			
	Lo Tagged	I	II	III	IV	Social	Personal	Vocational	Educational	Selected	Constructed	VSA 1 mark	SA 2 mark	LA 3 mark	VLA 5 mark
sec -A Reading					01 x 05 = 05						01				01
sec -B Writing			01 x 02 = 02	01 x 05 = 05 01 x 03 = 03							03		01	01	01
sec - c Grammar		04 x 01 = 04 01 x 02 = 02	02 x 02 = 04							04	03	04	03		
Sec - D Literature		01 x 01 = 01	01 x 02 = 02 03 x 03 = 09	01 x 03 = 03						01	05	01	01	04	
Total QS		06	07	03	01							05	05	05	02
Total Marks		07	17	11	05							05	10	15	10
Question - Wise %		35	41	18	06										
Marks - Wise		17.5	42.5	27.5	12.5										

बढ़ते कदम
आकलन से शैक्षिक गुणवत्ता की ओर...

समरूपता, वैधता, विश्वसनीयता

एस. एल. ए. आंकड़ों में

43,824 स्कूल
कक्षा – 1 से 8
विषय – समस्त
28,93,738 विद्यार्थी
उत्तर पुस्तिका – 1.41 करोड़

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़